



जो चाहें

---

सो

---

कैसे पायें ?

— श्री ११११



## अनुक्रमणिका

आत्मविश्वास कल्पवृक्ष है	७
भ्रम-करण से वार्तामाप	२२
भ्रम-श्रृंखला	३५
शरीर का अणु-अणु शोषता है	४३
जो चाहें सो कैसे पायें ?	५३
अपने को पहचानिये	६६
हँसते हँसते, जियें	७७
विश्वास का अमरकार	८८
श्रद्धा और सिद्धि का माग	९७
प्रभु से अभेद	१०८



## आत्म-विश्वास कल्पतरु है

श्री एडमंड कैंपूर ब्राड्स ने बिस्व महायुद्ध के धूरवीर सैनिकों के विषय में लिखा है—“हम जिन नवयुवकों को अत्यन्त साधारण समझ रहे थे युद्ध में उनके अद्वितीय कारनामे सुनकर हमें अचरब हुआ। उदाहरणत एक नवयुवक जो बिद्यार्थी जीवन से सवथा शिथिल था एव खेती में प्रायः अनुपस्थित रहा करता था, शायद ही कभी उत्तीर्ण हो पाता था, उसने सेना में प्रवेश पाने का प्रयत्न किया परन्तु वह मेडिकल परीक्षा में अयोग्य घोषित किया गया। उसने बहुत यत्न किया, परन्तु वह सफल न हो सका। पता नहीं कैसे कुछ दिनों उपरान्त वह सेना में स्थान पाने में सफल हो गया। इस समाचार से यह विचार आया कि कुछ ही दिनों बाद वह अशक्त होकर बंगलौर से वापस आ जाएगा परन्तु उस भयानक युद्ध-क्षेत्र में उसने ऐसे विपन्न साहस का प्रदर्शन किया कि उसे सुनकर हमें भारी अश्चम्भा हुआ। बड़ी नवयुवक जो कुछ दिनों पूर्व अयोग्य एवं अकाम्य माना जाता था उसने जसते हुए एक बम को उठा लिया और साई से बाहर फेंक दिया और भीषण गोली बर्षा में अपनी जान पर खेलकर अपने एक साथी की प्राण रक्षा की।” ऐसे कई नवयुवक



## आत्म-विश्वास कल्पतरु है

श्री एडमंड कैंपूर ब्राड्स ने बिद्वन् महायुद्ध के शूरवीर सैनिकों के विषय में लिखा है—“हम जिन नवयुवकों को प्रत्यस्त साधारण समझ रहे थे, युद्ध में उनके अद्वितीय कारनामे सुनकर हमें अचरज हुआ। उदाहरणतः एक नवयुवक जो विद्यार्थी जीवन से सर्वथा शिथिल था एवं श्रेणी में प्रायः अनुपस्थित रहा करता था, घायल ही कभी उसीन हो पाता था, उसने सेना में प्रवेश पाने का प्रयत्न किया, परन्तु वह मेडिकल परीक्षा में अयोग्य घोषित किया गया। उसने बहुत यत्न किया, परन्तु वह सफल न हो सका। पता नहीं कैसे कुछ दिनों उपरान्त वह सेना में स्थान पाने में सफल हो गया। इस समाचार से यह विचार आया कि कुछ ही दिनों बाद वह अज्ञहीन होकर रणक्षेत्र से वापस आ जाएगा परन्तु उस मयामक युद्ध-क्षेत्र में उसने ऐसे विपन्न साहस का प्रदर्शन किया कि उसे सुनकर हमें भारी अचम्भा हुआ। वही नवयुवक जो कुछ दिनों पूर्व अयोग्य एवं अक्षम्य माना जाता था, उसने जसठे हुए एक बम को उठा लिया और लाई से बाहर फेंक दिया और भीषण गोली बर्षा में अपनी जान पर खेलकर अपने एक साथी की प्राण रक्षा की।” ऐसे कई नवयुवक



हमें जीवन में मिलते हैं जो अकस्मात् किसी कार्य में अद्वितीय रूप से सफल होकर हमें प्रकृष्ट कर देते हैं। भले ही वे दूसरों से कम योग्यता रखते हों, परन्तु उनके आत्मविश्वास की प्रकृष्टता उन्हें दूसरों से अधिक सफल बना देती है। सफलता की ऊँची बोटी पर बढ़ने में उनका आत्मविश्वास उनका सहायक होता है। आत्मविश्वास के द्वारा ही असंभव प्रतीत होने वाले कार्य सम्भव हो पाते हैं।

यदि मानव में समीचीन विचार-शक्ति होती तो संसार में विश्वास का ही सदा शासन होता। परमेश्वर ने तो मानव को डर, निराशा भाव धारि का शाय नहीं दिया उसने तो वन एवं स्वस्थता का वरदान दिया परन्तु मानव अपना मूल्यार्जन अपनी शक्ति के अनुसार न करके अपनी अशक्ति अपना दुर्बलता के अनुसार करता है। वह अपना महत्त्व विजय से नहीं अपना अशुभ्य अपनी पराजय से मापता है। बहुत-से लोग अपनी विजय की आकांक्षाओं को केवल स्वप्न समझते हैं वे उन्हें अपने जीवन का एक अङ्ग नहीं बना पाते। अनेक मनुष्य यह मानते हैं कि आत्मविश्वास प्रत्येक प्रकार की सफलता के लिए अनिवार्य है। शक्तिशाली प्रेरक शक्ति इस जगत् में कोई है तो वह आत्मविश्वास ही है। यह कथन सबका उचित है कि मानव नहीं बल्कि विश्वास ही धारण करते हैं।

मानव का अपना सामर्थ्य तो केवल सामन-भाव है। वास्तविक सामर्थ्य तो मानव में विश्वास द्वारा उत्पन्न होती है। उसी की सत्ता से मनुष्य असंभव को सम्भव बनाता है। ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि सामर्थ्य होते हुए

भो मनुष्य विश्वास क प्रभाव के कारण असफल हो जाता है। युद्ध-क्षेत्र में मोर्चे पर खड़े एक वीर का यह कथम जीवन-सपना में सवे मनुष्य के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है—“रण में बन्दूक नहीं लड़तो उसे धामने वाला सैनिक युद्ध नहीं करता, बल्कि उस सैनिक का हृदय युद्ध करता है बल्कि हृदय भी नहीं उस हृदय में विद्यमान उसका विश्वास युद्ध करता है।

युद्ध के दिन थे। राज्य को घोर से प्रत्येक मनुष्य को बन्दूक दी गई थी। एक मनुष्य बन्दूक उठाकर अपने मकान की छत पर जा बैठा। अकस्मात् मकान के नीचे एक शत्रु धाया और उसने उसे समझाया। वह बोला—‘बन्दूक इधर फेंका अथवा अपनी साठी से तुम्हारा अन्न-अन्न तोड़ दूंगा।’ बन्दूक वाला मनुष्य कांप उठा। उसने नीचे साठी-धारी शत्रु को देखा। हाथ में बन्दूक होते हुए भी साहस क प्रभाव के कारण उसके हाथों से बन्दूक लिसकी और साठी-धारी क पास जा गिरी। उसने हसकर उसे उठा लिया उसकी पहली गोली उस बन्दूक के स्वामी की छाती में सगी और उसे इस सोक को छोड़ना पड़ा।

अपनी पसंद (टुकड़ी) का दूरबीर गोसियय अब इजराइलियों के विरुद्ध में पहुँचकर उन्हें लड़ने के लिए समझाने लगा तब वे लोग उसको समझाकर मुनकर कांप उठ घागे बढ़ कर गोसियय से जूमन का फिसा में साहस न हुआ। अब गोसियय ने दुसारा उन्हें पुनीती दी ता खेविड नामक एक साधारण नवयुवन उससे जूमन को उतारू होशया। बड़ों से आज्ञा पाकर अब उसने घागे

कदम बढ़ाया तब उन्होंने उसे कई शस्त्र दिये । परन्तु डेविड ने यह कहकर उन शस्त्रों को सोटा दिया—‘इन शस्त्रों का प्रयोग करने की मुझे धादत नहीं, मेरे लिए ये किसी काम के नहीं हैं मैं अपने ही हथियारों द्वारा युद्ध करूँगा ।’ माग से कुछ परपर उठाकर और अपने घनुप को सायकर वह युद्ध करने के लिए धामे षड़ा । उषर गोनिषष षनने भारी शस्त्रास्त्रों से षैष षा । उस निःशस्त्र नबमुषन के युद्ध के लिए धामे षड़ते देखकर गरज उठा धापी मरे सम्मुख धामो तो मैं तुम्हारे टुकड़े करके धासमाम के षंछियो को जिनना षासूँ ।’ डविड ने षसीम साहस भरा उत्तर दिया “मेरे सम्मुख तुम ढास और षड्ग सेकर धाए हो परन्तु मैं षपने संग एक षप राजेय शस्त्र सेकर धाया हूँ, वह है बिजयी-दिरोमणि इबराइम का हड्डी बिष्वास । उसी शक्ति ने बस पर मैं धाज तुम्हें परास्त्र करूँगा ।”

डेविड को षपन गनु की भाँति बाहरी शस्त्रास्त्रों का सहारा न षा, षपिठु उसे परमात्मा की शक्ति पर बिष्वास षा । उसी की सामर्थ्य से वह उस महारथी को षछाड़ने में सफल हुआ । वह युद्धक बिष्वास के षबष से सुरसिठ षा । उसके घनुप से छूटे एक ही परपर के टुकड़े ने गोनिषष के मस्तक में गड़कर उसका काम तमाम कर दिया ।

धत स्रुषता की कु जी यदि कोई है तो वह बिष्वास है । बिष्वास के मभाव में बिजय षसंभव है । बिष्वास की हड्डी कीजिए सफलता षापके षेर में सोटेगी । किसी भी बिषेता की धोर ध्यान दीजिए उसकी षीठ का रू

स्य उसके घटस विद्वास में है। ससार का सबसे बड़ा बमत्कार विद्वास ही है। विद्वास के आधार पर ही मानव की सम्पूर्ण सफलताओं का भवन टिका हुआ है। विद्वास के बस से धाप उस कार्य में भी सफल हो सकते हैं जिसे धाप असंभव मान बैठे हैं।

आत्मविश्वासी मनुष्य के लिए कौन-सा काम असंभव है ? आत्मविद्वास को आगूत करके हम अपने बस को दिगुणित कर लेते हैं। हमारी विविध प्रसुप्त शक्तियाँ आगूत हो उठती हैं। आत्मविद्वास के बस पर कहे हुए शब्द सहस्रों लोगों के मन में उस विद्वास का सञ्चार कर सकते हैं, जिसके बस पर वे मयानक से मयानक संकट में भी पवत के समान घटस रहें। सर्वशक्तिमाम् भगवान् के प्रति विद्वास के प्रभाव में मानव वह कदापि नहीं बन सकता जो वह बनने की आकांक्षा रखता है। ईश्वरहीन की संपूर्ण प्रायनाएँ दूम्य से दूया वापस सौट जाती हैं। किठना ही परिश्रम किया जाए, पर अविद्वास ऐसा पातक शस्त्र है जिसके द्वारा सफलता की समाधि-माएँ कट जाती हैं। जिस प्रकार पृथ्वी से ऊपर को फेंका हुआ पाषाण अन्तरिक्ष में नहीं पहुँच सकता, उसी प्रकार अविद्वासी मन जीवन के उच्च शस्य स्वस तक नहीं पहुँच सकता, क्योंकि पाषाण ऊपर जाता हुआ पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के नियम को तोड़ता है और अपनी सफलता पर सन्देह और अविद्वास जीवन के नियम को तोड़ता है।

आत्मविश्वासी एव आत्मविद्वास से रहित मनुष्य में घरती और आकाश का अन्तर है। आत्मविद्वास से रहित शक्ति का जीवन निरन्तर पराजय की घोर मुडकता

रहता है जबकि धारमविश्वासो मनुष्य का जीवन अधि-  
 राम गति से विजय को मोर प्रसर होता रहता है ।  
 ससार में जो भी महान् कार्य हुए हैं वे धारमविश्वास के  
 धन पर हुए हैं । जिन लोगों को अपनी शक्तियों पर  
 विश्वास नहीं, वे शक्ति को प्राप्त भी नहीं कर सकते  
 और न ही किसी विषय में कृतकार्य हो सकते हैं ।

एक नवयुवती अपने पत्र में लिखती है—“मैंने अपने  
 जीवन में निरन्तर सूखें की हैं । मुझे प्रत्येक कार्य में अस-  
 फलता का मुँह देखना पड़ा है । मुझे कभी भी अपने ऊपर  
 भरोसा नहीं हुआ । धार्मिक मनुष्य में भी कदापि न हो  
 सकेगा ।’ उस नवयुवती की असफलताओं का कारण  
 उसमें धारमविश्वास का अभाव है । अकारण सदा  
 विफल होता है और अन्त में बुरी तरह नष्ट होता है  
 इसी प्रकार निराशापूर्ण एवं सदिग्ध भी किसी कार्य  
 में सफल नहीं हो सकता । सबसे पहले हृदय के अन्दर ही  
 सफलता का बीजारोपण होता है । जब मन में ही सफ-  
 लता बढ़ न पमा सकी तो संसार की कोई भी शक्ति  
 सफलता पाने में सहायता नहीं कर सकती ।

अधरे धारमविश्वास के कारण अनेकों मनुष्य अपने  
 जीवन को नष्ट कर डालते हैं । ऐसे केवल दो प्रतिशत  
 मनुष्य ही इस ससार में होंगे, जो वास्तव में अपने गौरव  
 एवं अपनी योग्यता पर विश्वास रखते हैं । नैपोसियन  
 प्रयत्न ब्रेम्स्टर की योग्यता कुछ भी न कर पाती, यदि  
 उन्हें अपनी योग्यता पर विश्वास न होता ।

विजय पर अटल विश्वास, अपने सामर्थ्य पर अटूट  
 निष्ठा, सफलता की पहली पात है । कात्तिक छोड़कर जब

वेन एहम्स आई तो उसकी देह को देखकर डाक्टरों का कथन था कि वह छ मास से अधिक गायद ही जिएगी परन्तु उसने छ मास में ही उस काय को पूरे कर लिया जो उसे करना था। यह घनेकों घप तक जीवित रही और मानव कल्याण के लिए हस हाउस' की स्थापना में सफल हुई। उसकी सफलता के आधार-उत्तम्य थे—  
 आत्मविश्वास तथा ईश्वर विश्वास।

एक मनुष्य सबया लीणकाय और निवस था। उसे एक मनोवैज्ञानिक ने मात्रमुग्ध करके उसमें एसा आत्म-विश्वास जगाया कि वह मनुष्य साग घाठ सोर्गों को घपने घरीर पर विठा सकन में सफल हुघा। तनिक बिचार कीजिए कि उसमें यह घसामाय घसीम घक्ति घाई कहीं से ? उस मनोवैज्ञानिक ने उसमें जो विश्वास की भायना नर दी थी उसी के घस पर वह ऐसा कर सका। इसके बाद जब उसे यह कह दिया गया कि उसमें उस बोध को उठाने का सामध्य नहीं तो वह विश्वास-हीन हो गया और सुरन्त ही घरती पर गिर पड़ा।

आत्मविश्वास के बिना हम प्रगति के पथ पर घागे नहीं घड़ सकते। हमारे आत्मविश्वास के घागे हमारी सफलता नहीं घामकती। हमारे सङ्घुचित विचार हमें घपने सोमा-बग्यन में बाध रखते हैं। उन्हें साधकर जब तम हन विश्वास के राज्य में पग नहीं घरते, तब तक हम अपनी घाया-घाकायाघों के रदघ को पूरा नहीं कर सकते।

गायद एक मनोवैज्ञानिक दोस्सपीदर घपदा रंघ्टर को भी यह विश्वास दिना दना कि ये घधिक ने घधिक

यदि कुछ हैं तो मूल हैं। परन्तु प्रश्न यह है कि मनो-  
 वैज्ञानिक की बात को ठीक मानने की शक्ति मनुष्य में  
 कहाँ से घाती है? मनोवैज्ञानिक क्या उस व्यक्ति में  
 शक्ति बाँस देता है? ऐसा कदापि नहीं होता। वास्तव  
 में शक्ति ही मानव के भीतर है, मनोवैज्ञानिक तो उस  
 शक्ति को बाहर प्रकट कर देने का कार्य करता है। किसी  
 प्रबल मस्तिष्क की शक्ति केवल उसके पृष्ठों में नहीं रहती,  
 वह तो उसके अन्तःकरण से घाती है। उसके हृदय से  
 यदि उन मांस पेशियों का सम्बन्ध काट दिया जाए तो  
 उसमें उसकी दसमांश शक्ति भी बाकी न रहे। ज्यों-ज्यों  
 आत्मविश्वास में वृद्धि होती है, त्यों त्यों कार्य करने का  
 सामर्थ्य भी बढ़ता जाता है। यदि हमने आत्मविश्वास  
 का बर्तन छोटा रखा तो उसमें देवी शक्ति का प्रभाव भी  
 कम ही था पाएगा।

अफ्राहम लिंकन में भ्रमता थी उसमें अहङ्कार न था,  
 परन्तु जब अमेरिका में गृह-युद्ध के वादक छा गए और  
 राष्ट्रपति का चुनाव आया, तो उस समय लिंकन के हृदय  
 में यह प्रेरणा हुई कि वह क्यों न सारे राष्ट्र को बागडोर  
 सम्भाले। वह राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार बना।  
 राजनीतियों का उसने बर्तन दिया कि वह इस आपत्काल  
 में देश का बलभार बनने की पूरी योग्यता रखता है।  
 उसने यह भी आत्मविश्वास प्रकट किया कि वह चुनाव  
 में अचरम ही विजयी होगा। यह आत्मदत्ताया के वचन  
 न थे, अपितु वह आत्मविश्वास की शोचस्वी वाणी थी।  
 इसी आत्मविश्वास के कारण वह अमेरिका के राष्ट्रपति  
 पद को पा सका।

आत्मविश्वासी व्यक्ति इतिहास में घमर हो गए हैं ।  
 उन्हें निश्चय था कि उनके स्वप्न अवश्य ही पूर्ण होंगे ।  
 आत्मविश्वास के बल पर ही वे निरन्तर घाम हो घामे  
 बढ़ते चले गये और अन्त में अपने लक्ष्य पर पहुँच कर ही  
 उन्हें निदम लिया, क्योंकि जिन्हें यह विदित होता है  
 कि उन्हें कहीं पहुँचना है, उनके लिए संसार अपने घाप  
 रास्ता छोड़ देता है ।

प्रबल आत्मविश्वास के बल पर ही 'जोन ग्राफ ग्राक'  
 फ्रेंच सेना की सेनापति बनने में सफल हुई । उसकी यह  
 मिष्ठा थी कि परमेश्वर ने उसे देश की स्वाधीनता के  
 लिए संसार में भेजा है । यदि उसमें इतना आत्मविश्वास  
 न होता तो उसके बचनों की महत्ता एक साधारण सैनिक  
 के बचनों से अधिक न होती । आत्मविश्वास तथा ईश्वर  
 शीय विश्वास के अभाव में यह कदापि चार्ल्स डेफिन्स के  
 पास जाकर उससे फ्रेंच सेना के नेतृत्व का अधिकार  
 नहीं ले सकती थी । आत्मविश्वास के बल पर ही यह  
 चार्ल्स को यह समझाने में सफल हुई कि उस समय उसी  
 के नेतृत्व में फ्रांस की सेना देश की रक्षा करने में बुरा  
 काय हो सकती है । उसके मन में यह दृढ़ विश्वास था  
 कि उसकी कमान में फ्रेंच सेना अवश्य ही विजय प्राप्त  
 करेगी । जोन का यह प्रबल आत्मविश्वास ही उसके तथा  
 देश के लिए दरवान सिद्ध हुआ । वह युद्ध की कत्ता का  
 अ-घा भी न सीपी थी परन्तु आत्मविश्वास की अजेय  
 शक्ति से उसने एक पराजित सेना को विजयिनी बनाकर  
 छोड़ा । उसके पय की बाधाएँ कुछ कम न थीं, परन्तु  
 उनका उस पर शनिक भी अभाव न हुआ । उन सबको



रौंदकर वह घागे ही बढ़ती पसी गई । नैपोसियन जसा कोई भी मुख्य सैनिक शिक्षा के अभाव में उसके समान कमरदार कर दिखाने में असमर्थ हो रहता परन्तु अथ रात्रि आत्मविश्वास न उस अशिक्षित शक्तिका को विजय का झुंड पहना दिया ।

पियरे जिस आत्मविश्वास के सहारे उत्तरी ध्रुव की खोज पर निकला उसकी केवल बल्पना ही की जा सकती है । अनेकों बार प्राणों को हृषेसी पर संकर उसे भागे बढ़ना पडा । उसका अस्तमान लण्ड-लण्ड हो गया संगी-साथी विद्युत् गये पर वह अविचलित रहा । उसके अत-करण में उत्तरी ध्रुव विद्यमान था । एक क्षण के लिए भी उसने उत्तरी ध्रुव के अक्षय से अपनी दृष्टि को न हटाया । अन्तत एक दिन उसने उत्तरी ध्रुव को खोज ही लिया । पहारों को भी हिला देने वाली शक्ति आत्म-विश्वास ही है । जिसका आत्मविश्वास जाग गया उसके लिए असम्भव काम भी सम्भव हो गया ।

छोटे-छोटे पदों पर कार्य करने वाले मनुष्य संसार में अनेकों हैं । अपने अफसरों से अधिक योग्यता समझदारी व कार्य-कुशलता होते हुए भी वे आत्मविश्वास के अभाव में छोटे-मोटे स्थान पर ही पड़े सड़ते रहते हैं परन्तु जब कभी उन्हें अस्थायी रूप में किसी अधिकारी के स्थान पर कार्य करने का अवसर मिल जाता है तब उनका शक्तियाँ जागृत हो उठती हैं और वे स्वयं अकृति रह जाते हैं कि जिस पद पर कार्य करना है अपने लिए असम्भव समझते थे, उस पद के कार्य को वे अनायास और अच्छे तरह से करने में समर्थ हैं । फिर उन्हें ऊँचा पद पाने में

कठिनाई नहीं होती ।

जैसा आपका विश्वास होगा वैसा ही आपका जीवन बनेगा । जीवन को आध्यात्म स्फूर्तिमय और उत्साहमय बनाइये । फिर कौन-सा काम है जिसकी ओर सफलता-पूर्वक पग बढ़ाना आपके लिए कठिन है ? जीवन को नष्ट भ्रष्ट करने वाली बात है—संशय और आत्मविश्वास का अभाव । 'कहीं मैं असफल न हो जाऊँ' यह संशय मन से बाहर निकाल फेंकिए और आधा व विश्वास का जीवन जीना आरम्भ कर दीजिए । मनुष्य जब अपनी कार्यक्षमता पर सम्यक् करता है, अपनी योग्यता का विश्वास जो देता है, तभी वह असफल होता है । जीवन को उसके वास्तविक रूप में व्यतीत करने की शिक्षा देने वाला सर्वोत्तम शिक्षक आत्मविश्वास ही है । आत्मविश्वास द्वारा ही मनुष्य की शक्ति के प्रवाह का अवरोध हटाना संभव होता है । किसी मनुष्य की सफलता का मूल्यांकन करना हो तो उसके आत्मविश्वास को तोलें । बिज्जयदासी ने अनेक बाधाओं को पार करके इन्द्रसिंह के प्रधान मन्त्रिण को प्राप्त किया । उसका यह कथन कितना ठप्यूप है— 'मानव-जीवन का सर्वाधिक आशय है, उसका व्यय ही चिन्ता-ग्रस्त होना तथा जीवन में चिन्ता ही मुख्य मानना ।'

इन्द्र का स्थान बहुत ऊँचा है । वह किसी देश की जनता की शक्ति का प्रतीक है परन्तु इन्द्र वहीं तक आगे बढ़ सकता है, जहाँ तक उसका देश की जनता आगे बढ़ी होती है । यही बात मनुष्य के विषय में भी है । मनुष्य ही तक आगे बढ़ सकता है जहाँ तक बढ़ने का वह अपने

मन को विश्वास दिला सकता है। अन्य लोग धापको वही समझते हैं जो धाप धपने धापको समझते हैं। सोप धापको उससे अधिक कुछ नहीं समझ सकते। किसी भी मनुष्य का मूल्य व महत्व संसार उतना ही समझता है जितनी उस मनुष्य में धात्मविश्वास और उद्देश्य-भूति के लिए धपस निष्ठा हो।

मन के राज्य में विश्वास ही सेनापति है। सभी शक्तियाँ उसी की आज्ञा मान कर चलती हैं। जहाँ तक धात्मविश्वास धाशा संकेत धपवा प्रेरणा देता है वहीं तक वे धपसर होती हैं। जब तक मत्ता घटस है सेना भी घटस रहेगी। जब नेता ही भागने को तत्पर हो तो सेना कैसे टिक सकती है? ईपबर की धपराजेय शक्ति से हमारा सम्बन्ध जोड़ने वाला विश्वास ही है। उस सम्बन्ध के जुड़ते ही सफलता हमारे धरण धूमने सयती है। विश्वास बिस्ता नहीं करता, वह अनुमान नहीं करता वह निश्चित रूप से जानता है कि वह जीवन का धगुध है। वह कभी पय झप्ट नहीं होता।

संसार में ईसाई मत की सबसे धधिक धामोधन हुई है। बाइबिल को पिटाने के सबसे धधिक प्रयत्न हुए हैं। इतना होने पर भी बाइबिल संसार में सबसे धधिक बिकती है। घटस विश्वास ने ही ईसाई मत को धाज व जीवित रखा है। नि-धस्त्र ईसाई, जो रोमन साम्राज की धजेय शक्ति से सोहा सेने को प्रस्तुत थे, उनकी बीर की कल्पना ही की जा सकती है। धनेकों ने प्राण व पापा, धनेकों को हिय पधुधों क धागे डाल दिया गय सम्राट नीरो व प्रासाद के सम्मुख धगवित ध्यक्ति व

डासे गये। परन्तु प्रन्तु में रोम जत गया और वे वीर विजयी हुए। आत्मविश्वास की सफलताएँ असाधारण होती हैं, उनकी गणना करना असम्भव है। वैज्ञानिकों एवं आविष्कारकों ने अगणित कष्ट सहन किए, परन्तु वे अपने उद्देश्य से विमुक्त न हुए, क्योंकि विश्वास के अजस्र स्रोत से उन्हें असामान्य सहनशीलता प्राप्त हो रही थी।

जितनी प्रबल आशा आकांक्षा होगी, जितना हृदय आत्मविश्वास होगा उतनी ही सफलता पाने की सामर्थ्य आपमें आयेगी। बबर युग से निरन्तर आगे बढ़ती मानव सम्यता को विश्वास का ही तो सहारा रहा है। विश्वास ही वह सोपान है जिस पर चढ़ कर मनुष्य सम्यता की चोटी पर चढ़ पाया है, परन्तु विश्वास की प्रेरणा पर आगे पग बढ़ाने वाले मनुष्य इने गिने ही हैं। वास्तव में यह सत्य है कि जो ध्यात आत्मविश्वास तथा ईश्वर-विश्वास के भरोसे आगे बढ़ता है उसे सफलता मिसकर ही रहती है। अनेकों मनुष्यों की निबसता का कारण आत्मविश्वास का अभाव ही है। जगत् में सबसे कठिन कार्य अपने छिपे सामर्थ्य को खोज करके अपने मन में आत्मविश्वास का सम्पादन करना है। जब मानव को अपनी गुप्त शक्ति का ज्ञान हो जाता है, तब उसका सन्देह मिट जाता है, अस्त-विराट में विश्वास की जड़ जम जाती है और मनुष्य को समस्त प्रसुप्त शक्तियाँ जामृत हो जाती हैं।

बाइबिल में आदि से अन्त तक विश्वास की ही महिमा का गान किया गया है। इसी के बल पर सिद्ध

अपने गौरवमय लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल हुआ।  
 मीसिन' ने विश्वास के आधार पर ही सौरी को इज्जत  
 हम के सपन बनों से पार करके ईश्वर की ओर से आने  
 में सफलता प्राप्त की। 'मोन्ड टेस्टामेंट' में सभी पंगम्बरों  
 ने विश्वास की ही शक्ति पर जोर दिया है। ईसा मसीह  
 ने अनेकों बार कहा है— तुम अपने विश्वास के अनुसार  
 ही बन जाओगे।' विश्वास तथा धर्या को सबसे ऊँचा,  
 गौरवमय पद दिया गया है। इन दोनों शब्दों का मनुष्य  
 के मन पर बादू-सा असर पड़ता है।

हजरत ईसा मसीह ने लोगों को विश्वास विभाते हुए  
 स्पष्ट और बार-बार कहा—' जो मुझ पर विश्वास  
 रखता है वह मेरे समान नहीं, अपितु मुझसे भी बड़-  
 बड़कर गौरवमय काम कर सकता है।' विश्वास ही  
 जीवन-ज्योति है जो अन्धकार में प्रकाश दिखाती है।  
 विश्वास के अभाव में ही जीवन में सकट तथा असफल  
 ताएँ आती हैं। अपने पापको सुझाय देकर मनुष्य अपने  
 मन के आत्मविश्वास की कमी को दूर कर सकता है।

पाप प्रभु के पुत्र हैं। पिता को अपने पुत्र का निर्वन्त  
 हृदय परम्व नहीं। उसने पापको सफल होने के लिए अन्ध  
 दिया है। वह किसी को असफलता नहीं देता। अतः  
 सन्देह द्वारा अपनी उच्च आकांक्षाओं को नष्ट मत  
 कीजिए। उदास एवं निरास मुख लेकर अपने अंधारों  
 के सम्मुख आते हुए क्या पापको नाश नहीं लगती ?  
 संसार को अपने रहने के अयोग्य मत समझिए। जीवन  
 में जो महान् काम पूर्ण करने की कामना पाप करते हैं  
 उसे तो ईश्वर ने पहले ही नियत कर दिया था। प्रभु की

मूर्ति आपके अन्तःकरण में ही विराजमान है उसकी शक्ति को अपने कार्यों में प्रकट करना आपका कर्तव्य है।" इस प्रकार की प्रेरणा तथा शक्ति प्राप्त करने के लिए आत्मविश्वास का पस्सा पकड़िए। अपने अस्तित्व को प्रकट करना अहङ्कार नहीं है। इससे तो आप अपने शरीर का अभिमान न प्रकट करके अन्तःकरण में विद्यमान प्रभु की सत्ता को प्रकट करते हैं। पर ध्यान रहे कि सकट में अगमगान वाले आत्मविश्वास की कोई सायकता नहीं। एक दिन सफलता पाकर आशा के हिबोले पर झूमना और दूसरे दिन असफलता पाकर मुँह सटका देना यह प्रकट करता है कि आपका विश्वास कच्चा है।

जीवन का विषय क्या है? डर निराशा और सन्देह। जीवन का अमृत क्या है?—उत्साह शक्ति और आत्म-विश्वास। सदा उष्ण आकाशों के समथक मित्रों को हृदय में अगह दीजिए। उनकी सहकारिता में ही आपकी आशा आकाशाएँ मूल रूप में प्रकट होंगी।

मानव को जब उस प्रभु की शक्ति तथा उससे अपने सम्बन्ध को पहचान हो जाती है तब वह प्रबल आत्म-विश्वासी तथा विजयी बन जाता है, तब ससार की समस्त शक्तियाँ उसको सहायक बन जाती हैं। आत्म-विश्वास और ईश्वरीय विश्वास ससार के गौरवमय अंग हैं। इन्हीं के आधार पर जीवन में असाधारण परिवर्तन होते हैं।



## अन्तःकरण से वार्तालाप

संसार में कितने ऐसे लोग हैं जो अपनी आत्मा की भाषा को अपने शब्दों से प्रकट करते हैं? मनुष्य जो कुछ चिन्तन करता है, उसी को शब्दों के रूप में प्रकट करता है। मनुष्य की नीरोगता, उसका स्वभाव, उसका भावना उसके शब्दों से ही प्रकट होता है। यह सही है, मूल विचारों का दर्पण है परन्तु मानव की स्वस्थता व उसका जीवन उसके विचारों का प्रतिबिम्ब है। मूल से व्यक्त हुए प्रत्येक शब्द में ऐसा सामर्थ्य है जिसका जीवन के सभी अंशों पर प्रभाव पड़ता है।

शब्द की शक्ति को पहचान कर ही ईसा मसीह ने कहा था—“स्वर्ग तथा पृथ्वी मिट सकते हैं परन्तु मेरे शब्द धमकें हैं। वास्तव में अन्तःकरण से निकले हुए शब्दों में असाध्य शक्ति व शक्ति से अधिक शक्ति होती है। बाइबिल में शब्द के सामर्थ्य का गौरव को बताया गया है। जीवन को प्रेरणादायक तथा संप्रदाय बनाने वाली शक्ति—शब्द-शक्ति ही है। मुँह से प्रकट किए गए शब्द में एक अमलकार-गुण बस होता है, जिसका मन पर ऐसा प्रभाव पड़ता है जो कभी भी नहीं मिटता। अपने-अपने को बार-बार कहो—अपने विचारों को प्रकट

करो, इससे आपकी शक्तियाँ आपके चहुँ धोर जुट जाएंगी और उनसे आपको नवजीवन प्राप्त होगा ।

इसी मनोवैज्ञानिक कारण से वेरडन की सड़ाई में फ्रेंच सैनिकों को विजय प्राप्त हुई थी । जनरल पेताँ ने हर एक सिपाही के मन में यह मन्त्र फूँक दिया था कि जर्मनी की सेनाएँ फ्रांस की भूमि में न घुस सकेंगी । सेना नायक के इस अदम्य विश्वास के कारण सैनिकों का सामर्थ्य दुगुना त्रैगुना बढ़ गया । विजय की हड़ शब्दों में घोषणा विजय का मूसमन्त्र बनी । इन शब्दों के बस पर ही फ्रांसीसी सैनिक भीषण बम-वर्षा में भी मुस्कराते हुए, जीत की मन्त्री में निरन्तर आगे ही आगे बढ़ते चले गए । कठोर कैद प्रथवा मृत्यु का प्रत्यक्ष भय उनके विश्वास को परास्त करने में सफल हो सका । एक जर्मन डाक्टर ने कहा था—“मृत सैनिकों की मुक्तमुद्रा से भी स्पष्ट आत्मविश्वास भसकता था । मूर्छित हुए सैनिक भी यही घुदबुवाते थे—‘जर्मन सेनाएँ फ्रांस की धरती पर बन्म नहीं रख सकतीं ।’ और अन्त में यही हुआ जर्मन सैनिक फ्रांस की भूमि में प्रविष्ट होने में असमर्थ रहे । पर यदि आपके मन में भी इसी प्रकार सफलता का निश्चय हो जाए और आप उसे अपने शब्दों में प्रकट करते रहें तो निश्चय आनिष्ट, आप अपने जीवन के समस्त शत्रुओं को परास्त कर देंगे ।

शब्द ही हमारे विचारों के वाहन हैं । यदि हमारे शब्दों में प्रेम, सेवा तथा मन्त्री की भावनाएँ मरी हैं तो उनसे दूसरों के हृदयों में भी उन्हीं भावनाओं का संचार होगा । पर यदि हमारे शब्दों में ईर्ष्या द्वेष, घृणा और



वर भरे हुए हैं तो वे दूसरों के मन में भी वंसी ही भाव  
 नाएँ जगा देंगे। अन्तःकरण के मार्गों से शब्दों को प्रवे-  
 प्राप्त होता है। आज तक मानव-संस्कृति का जो विकास  
 हुआ है वह शब्दों द्वारा ही हुआ है। शब्द ही विद्या  
 को शक्ति द्वारा मानव की मनोव्यवस्थाओं को पूरा बन-  
 रहे हैं। जिस प्रकार प्रभु ने कहा और शरती बन गई,  
 उसी प्रकार मनुष्य ने भी जो कुछ कहा वही बन गया।  
 आवश्यकता इस बात की है कि शब्दों के पीछे एक विचार  
 सक्ति का बल हो।

मन में कहे शब्दों में जो शक्ति है मुँह से व्यक्त  
 किए शब्दों में उससे भी कहीं अधिक शक्ति है। मुँह से  
 शब्द के रूप में प्रकट हुए विचार, मन पर अपना गहरा  
 प्रभाव छोड़ जाते हैं। उदाहरणतः किसी उत्कृष्ट भाषण-  
 को सुनकर बिल पर जो प्रभाव पड़ता है वह किसी  
 शब्द को पढ़कर नहीं पड़ता। पुस्तक में लिखित शब्दों  
 को पढ़कर हम भ्रम भी सकते हैं, परन्तु कथित शब्दों को  
 सुलाना थोड़ा कठिन हो जाता है, ऐसा इसलिए होता है  
 कि यह मनोवैज्ञानिक सत्य है। पठित शब्दों का भी मन  
 पर प्रभाव होना आवश्यक है पर उतना नहीं जितना श्रुत  
 शब्दों का। महान् पुरुष अपने प्रबचनों से लोगों के जीवन  
 में सामान्य परिवर्तन कर देते हैं। उसका यही रहस्य है।  
 यही नहीं कि दूसरों ने कहे शब्द ही हमारे हृदय पर  
 अमिट प्रभाव डालते हैं। यद्यपि हमारे अपने-पने शब्द  
 या अपने किए हुए प्रण भी हमारे हृदय-परिवर्तन में  
 समर्थ होते हैं उनके द्वारा हमारे हृदय को सुरक्षित दूर  
 हो सकती है।

यदि हम अपने आपसे प्रत्यक्ष व प्रकट शब्दों में आत्म सुधार का प्रण करें तो उसका हमारे मन पर जादू-मा प्रभाव होता है। यही शब्द-शक्ति मानव-जीवन को नाया पसंद कर देती है।

यह अनुभव सिद्ध बात है कि यदि हम चाहें तो अपने मन से बाधा-साप कर सकते हैं। मन, बातों को सुनता तथा स्वीकार भी करता है। आवश्यकता इस बात की है कि मन से मौन रूप से बात न कहकर प्रकट शब्दों में कहें। प्रकट कहने से मन पर त्रिगुणित प्रभाव होता है। यदि हमारे शब्दों में सत्य है तो उससे हमारा चरित्र तथा जीवन सुधर सकता है। घोर निराशा एवं असफलता में भी, बहुत-से लोग अपने अन्तःकरण से बाधा-साप करके ही असाधारण सफलता और विजय प्राप्त कर चुके हैं। एक व्यक्ति मज्जा, संकोच तथा हीन भावना से ग्रस्त था। वह लोगों के सम्मुख अपने व बात करने से कतराता था। उसमें आत्मविश्वास तो था ही नहीं, साथ ही उसे यह भ्रम था कि वह स्वयं छतिया है परन्तु वास्तविकता यह थी कि वह एक ईमानदार तथा परिश्रमी व्यक्ति था। अकस्मात् एक दिन उसे एक नई विचारधारा की पुस्तक प्राप्त हुई। उसके अध्ययन से उस एक नवीन प्रकाश को किरण दिखाई दी। उस पुस्तक में यह सुझाव था कि अपने आपको उत्साहित करने में मनुष्य शक्ति-शाली हो जाता है। विशेषतः प्रकट शब्दों में उत्साहित करने से। उस पुस्तक की बातों को ठीक मानकर उसने उन पर आचरण करना आरम्भ कर दिया। उसने निरन्तर अपने आपसे बाधा-साप करने का

स्वभाव बना लिया। कुछ ही दिन उपरान्त उसे अपने  
 विचारों एवं भावों में अद्वितीय परिवर्तन होना दिखाई  
 देने लगा उसे अपनी शक्तियाँ विकसित होती हुई प्रतीत  
 होने लगीं। धीरे धीरे उसमें इतना परिवर्तन हुआ कि  
 वह न केवल समाजों में जापण करने लगा अपितु उनका  
 अध्ययन भी बनने लगा। उसका सज्जालु स्वभाव सर्वथा  
 अपनी योग्यता एवं क्षमता पर तनिक भी सन्देह न रहा।  
 निरन्तर आत्म-मुक्तियों द्वारा संसार की बड़ी मे बढ़  
 दुर्बलता दूर हो सकती है। आत्ममुक्त्य ही प्रक्रिया है  
 अनेक मानसिक शक्तियों को जागत एवं संप्राप्त किया जा  
 सकता है। हमारे भीतर बाह्य की मानि अपने ही शक्तियों  
 प्रयुक्तवस्था में विद्यमान रहती है। उन्हें आत्ममुक्त्य  
 की प्रियासलाई लगाने की आवश्यकता होती है।  
 भय सन्देह व उत्साह-हीनता को दूर भगाकर आत्म  
 विश्वास की स्थापना के लिए ये सब प्रयुक्त हैं—  
 इस काम को प्रबन्ध पूरा करूँगा मुझमें इस काम के  
 करने का सामर्थ्य है मैं इसे करके ही रहूँगा।  
 आपकी यदि अपनी वर्तमान उन्नति से प्रसन्न हो।  
 यदि आप समझते हैं कि आपने अपने प्रादर्य के अनुकूल  
 प्रगति नहीं की कोई ऐसी रुकावट है जो आपको आगे  
 नहीं बढ़ने देती तो उस रुकावट को खोज निकालिए और  
 उसे तोड़ने का सर्वोत्तम मार्ग अपने आपमें खोजिए ही  
 है। अपने प्रस्त-करण में दृष्टि डालिए, आत्म-साक्षा  
 त्कार कीलिए, अपनी सम्पूर्ण क्षमताओं एवं शक्तियों को  
 पहचानिए, इसके प्रमत्तर किसी एकान्त स्थल में स्थित

बैठिए धीर अपने से कहिए—“तुम्हारे प्रागे बढ़ने में, उन्नति करने में क्या बाधा है ? तुम्हें अपना सक्य क्यों नहीं प्राप्त हो रहा है ? तुम अपने सहकारियों से क्यों पिछड़ रहे हो ? तुम सामान्य-सा जीवन क्यों व्यतीत कर रहे हो ? क्यों तुमसे कम योग्यता वाले तुमसे प्रागे बढ़ रहे हैं ? क्या तुम्हारी कोई विषेय सुवसता तुम्हारे प्रगति-माग में बाधक है ? उस बाधा को ग्राह करो धीर उसे शीघ्र दूर कर दो अथवा तुम्हारा विकास रुक जाएगा ।

एक सूची बनाइए जिसमें एष धीर सफलता तथा दूसरी धीर असफलता के कारण लिखे हों जैसे—

सफलता	असफलता
साहस	अनुसाह
साहस	साहसहीनता
धीरता	अधीरता
प्रमत्नता	उदासी
प्राणा	निराशा
उत्साहकांक्षा	हीन भावना
प्रात्मविश्वास	प्रात्मविश्वास का अभाव

अब दोनों धीर के गुण-दोषों पर विचार कीजिए । जो-जो गुण या दोष प्राप में हैं उन पर चिह्न लगाइए । प्राप अब देखिए कि गुण अधिक हैं अथवा दोष ? इस प्रापको शीघ्र ही पता मम जाएगा कि प्राप कहाँ हैं ? प्रापकी उन्नति के माग को किसने रोक रखा है ? इसके बाद दोषों को दूर करने का प्रयत्न करके गुणों की सुख्या

तथा मात्रा बढ़ाए और फिर देखिए सफ़लता पाते हुए  
 किसनी द्रुत गति से आप अपने उद्देश्य के पास पहुँचते  
 दिखाई देंगे ।

अपनी हीन भावना को दूर करने के लिए अपने आप  
 से इस तरह वार्तालाप कीजिए —

‘मैं प्रभु का पुत्र हूँ । मेरे अन्दर प्रभु के गुणों का  
 असीम भण्डार है । उस दिव्य शक्ति के बल पर मैं जिस  
 वस्तु की सिद्धि चाहूँ प्राप्त कर सकता हूँ । मैं सफ़लता  
 का साकार रूप हूँ, मैं शक्ति हूँ, मैं योग्यता हूँ । मैं कायर  
 नहीं हूँ, फिर मुझे पिछड़ने की क्या आवश्यकता है ? मैं  
 इच्छानुकूल मनोरथ को पाने में समर्थ हूँ । मैं भविष्य  
 में अपने आपको हीन मानकर अपने भीतर ईश्वरीय  
 शक्ति का अनादर न करूँगा । अपने को तुच्छ, अकाम्य  
 व शक्तिहीन मानना प्रभु का अपमान है, उसके प्रति अप-  
 राध है क्योंकि मैं उसी का एक अंग हूँ । मैं सर्वशक्ति-  
 मान् महाराजाधिराज की सन्तान हूँ मैं राजकुमार हूँ ।  
 मैं अब किसी भी क्लेश्य कर्म से अपना उत्तरदायित्व द-  
 खित नहीं पुराऊँगा । मेरी योग्यता किसी से कम नहीं  
 है इस सत्य को मैं कभी न भुलाऊँगा । यदि मैं जीवा-  
 संघर्ष में आया आत्म विश्वास बल और बुद्धि को साथ  
 लेकर जीत आऊँगा तो मुझे विजय-श्री अवश्य ही वर-  
 करेगी । अपनी निन्दा आप नहीं करूँगा, इस बात क-  
 यत लूँगा । मैं अपने पर विश्वास करूँगा क्योंकि अपने  
 पर विश्वास भगवान् पर विश्वास है । जीवन के प्रत्ये-  
 क्ष में विजय प्राप्त करने का मेरा पूर्ण अधिकार है ।

इस प्रकार अ-उत्थरण से वार्तालाप करके जीवन :

एक घादन्वयजनक परिवर्तन लाया जा सकता है। उरसाह, साहस, मनःप्रसाद और आत्मविश्वास—जो गुण भी कम हो उसे प्राप्त किया जा सकता है।

अपने आपसे कहिए—“हृदय निश्चय से शक्ति प्राप्त होती है। हृदय निश्चय में मेरा अटम विश्वास है।”

सारसन ने दैनिक अभ्यास के लिए यह प्रतिज्ञाएँ निश्चित की थीं—

१ मैं सबसे गौरववाली बनूँगा।

२ मैं जीवन में और अधिक सफलता पाऊँगा। मैं जानता हूँ कि मैं पा सकता हूँ।

३ मैं अपने में तथा दूसरों में गुण ही देखूँगा।

४ मैं संकट क्षण पर त्रिगुणित शक्ति एवं गति से काय करूँगा। प्रत्येक संकट का सुभवसर बना दूँगा।

५ मैं उर्ध्वी कार्यों पदार्थों तथा सफलताओं की आकांक्षा करूँगा जिनसे मनुष्य जाति सत्य एवं स्वाधीनता के माग पर प्रगति कर सके।

६ मेरे शब्द सदा उरसाह जनक साहसप्रद स्फूर्तिदायक प्रेरणात्मक तथा हृदयप्रसन्न होंगे।

७ मैं सबदा जन जन के उपकार के काय करूँगा।

इस प्रकार अपने आप की महिमा तथा गौरव की जब आप घोषणा करेंगे तब मैं अहंकार का शरण नहीं रहूँगा। तब उसका आध्यात्मिक और साम्बिक अर्थ प्रकट होगा। 'मैं' का अर्थ 'मेरा शरीर' लेकर उसकी घोषणा करना है। उससे जीवन की लाभ नहीं प्राप्त हो सकता है। हानि भरे ही है। परन्तु जब हम अपने दबी शक्ति की स्थापना करते हैं अपने आत्मिक स्वरूप को प्रकट

करते हैं तब मैं का भय धारमा होता है, धारमा—  
 विश्वात्मा स पृथक नहीं।

हमें अपनी प्रतिभा की असीम शक्ति का ज्ञान सेना  
 चाहिए। हम इस महामन्त्र का बार-बार जप करना  
 चाहिए—

मैं सर्वशक्तिमान् परमात्मा का एक अणु हूँ। वह  
 सत्ता का स्रष्टा है। आत्मा एवं परमात्मा में अन्तर्गतता  
 है फिर मैं पूर्वस घोरे अणु कैसे हो सकता हूँ? 'इस  
 महामन्त्र को बार-बार दोहराने से सीमातीत रूप में  
 प्राप्ति हो सकती है। प्रतिभा की शक्ति महान् है गौरव  
 मयी है सीमातीत है। यादविल का इतना गौरव इसी  
 कारण से है क्योंकि वह इसी प्रकार की प्रतिभाओं से  
 परिपूष है।

सत्ता के गौरवशाली दार्शनिकों विचारकों एवं  
 सेलकों को कभी भी प्रमाणों से अपनी बात को सिद्ध  
 करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। उनका आत्मविश्वास  
 ही उनकी सबसे महान् दलील होती है। यदि अपनी बात  
 सिद्ध करने के लिए वे भी युक्तियों का सहारा लेते तो  
 पायद ही सोग उनका विश्वास करते। विश्वासपूर्वक  
 कहे शब्दों पर सन्देह होना कठिन होता है। आत्म  
 विश्वासी मनुष्यों के शब्दों में एता वस रहता है कि  
 सोग उसे सत्य मानकर उस पर आश्रय करने को तत्पर  
 हो जाते हैं। अपने आपसे वातासाय करके आप भी ऐसे  
 आत्मविश्वास का सम्पादन कर सकते हैं। भय, सकोच,  
 धराहट छोड़िए मत कहिए कि मैं प्रयत्न करूँगा,  
 अपितु हृदय विश्वासपूर्वक कहिए कि मैं इस कार्य को अब

य कर सकता है ।

अपनी आत्मा को ऊँचे घरातस पर प्रतिष्ठित करके ही आप अपने ईश्वरीय रूप को प्रकाशित कर सकते हैं । परमात्मा से आत्मा की अभिन्नता की अनुभूति होने पर ही हम उन कार्यों को करने सगते हैं जिन्हें वह हम से कराना चाहता है । सब हम अपनी दैहिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के पथ को किसी भी बाधा को परे हटा सकते हैं । बीता हुआ समय फिर नहीं सौटता, अतः हम उचित समय के अन्दर अपने कार्य को सम्पूण करने की क्षमता पा सकते हैं ।

स्मरण रहे कि आपके दाय्यों को आपकी आत्मा स बल प्राप्त होता है और आत्मा को शक्ति, शक्ति के उस परम स्रोत—परमेश्वर से प्राप्त होती है ।

जिन दाय्यों का आप मुक्त से उच्चारण करते हैं उनको आप अन्तःकरण से सत्य स्वीकार नहीं करते तो आपके वे शब्द सवया निर्जीव हैं । आपके प्रत्येक शब्द के पीछे आपकी सम्पूण मानसिक शक्ति का बस आपकी आत्मिक शक्ति का पूरा समर्पण आवश्यक है ।

परमेश्वर की दृष्टि में सब मनुष्य समान हैं । वह पिता है वह सबको समान रूप से प्रेम करता है वह किसी का भी पदापात नहीं करता वह सबको एक जैसे अधिकार एवं बरदान देता है । कम करने वास्तु की इच्छा पूर्ति यह अवश्य करता है । अतः अपने इष्ट कार्यों की पूर्ति के लिए उसका बर प्राप्त कीजिए ।

अपने प्रश्न को हर समय दोहराएँ, उन्हें पूरा करने के लिए प्रयत्न में जुट जाइए । अवसर स्वयं फिर कभी



नहीं आएगा, उसे धाप ही आएँगे। उस समय धापकी प्रतिष्ठा का भयस्कार प्रकट होगा। जितनी धार धाप प्रतिष्ठा को दोहराएँगे उसनी ही धार धापकी शक्तियों में बृद्धि होगी। धापकी बाहे कोई निम्दा करे या स्तुति धाप अपने शक्य को मत छोड़िए। साखों सोग भी बिछड़ रहें तो भी अपने उद्देश्य को मत भुसाइए, अपने धम पर अविश्वास मत कीजिए, धापको संसार में जो काय करना है वह धाप से ही सध सकेगा दूसरों के भरोसे पर उसे मत छोड़िए। अपने सामर्थ्य की संभावनाओं को पहचानिए। अपने को नमो भाँति पहचानिए, यही जीवन की ठँका उठाने की सर्वश्रेष्ठ विधि है। अपने धाप से एक अन्तरंग सत्ता की भाँति वातासाप करके ही धाप अपने को पहचान सकते हैं क्योंकि इसी प्रक्रिया से धाप अपनी नुटियों को दूर करके महान् गुणों से परिचय प्राप्त करते रहते हैं।

एडिसन क मित्रों में उससे धाराय पीने का आग्रह किया तो उसने कहा— 'मैं अपने धारीर तथा मन की सम्पूर्ण शक्तियों से पूण लाभ प्राप्त करने की आकांक्षा रखता हूँ अतः धाराय को मैं छू भी नहीं सकता क्योंकि इससे मेरी शक्तियाँ कुँठित हो जायेंगी और मेरा भविष्य अथ कार-मय हो जाएगा।'

धुराई से भयभीत होने अथवा निरास होने की आशय्यता नहीं। ऐसी कोई धुराई नहीं जो हृद बिभार तथा पूर्ण निश्चय से दूर न की जा सकती हो। प्रत्येक मनुष्य के तन-मन में एक ऐसी शक्ति है जो धुराई से सने तो कभी भी उससे परास्त नहीं हो सकती। ईदवर

सब में है और ईश्वरीय गुण भी सब में हैं। बुराई का प्राथकार ईश्वरीय-ज्योति से पस मर में छिन्न भिन्न हो जाएगा। संदिग्ध मन से कार्य करना और सफलता की कामना करना परस्पर-विरोधी बातें हैं। आवश्यक कार्यों को भूलने की आदत, हर बात में प्राथका करना, वहमीपन, ये सब दुर्गुण हैं जो ईश्वरीय शक्ति के विश्वास के अभाव में धरते हैं। जिस कार्य की प्राणांसा आपके हृदय में है, जिस कार्य का समयम आपकी अन्तरात्मा करती है उस पर सोच विचार मत करो, दुविधा में पड़ना कोई गुण नहीं बल्कि बुराई है जो सुनहले भविष्य को प्राथकारपूर्ण बना देती है।

आपका आदर्श ही आपका सत्य है फिर भी यदि किसी व्यक्ति को ही आदर्श रूप में प्रतिष्ठित करना हो, तो किसी ऐसे व्यक्ति को अपना आदर्श बनाओ जिसकी वायव्यसत्ता हृदय निदम्यता तथा आत्मविश्वास की सभी प्रसंशा करते हों। कार्य करते हुए आरम्भ में भूलने होने की संभावना है। पर इससे धराने की आवश्यकता नहीं। धरकर पीछे पग रखना कायरता है। अपने आपसे ये शब्द कहिए—

“मैं पीछे नहीं हटूंगा।”

परन्तु केवल शब्द बहना मात्र ही पर्याप्त नहीं, उसके पीछे अपनी सम्पूर्ण इच्छा-शक्ति को भी नियोजित कर दीजिए।

सबदा अपनी विजय की कामना कीजिये। सदा अपनी जीत की कल्पना कीजिये सदा अपने उदय का विश्वास रखिये। आपके मुखमण्डल से, आपके नेत्रों से,

स्थानों के कर्मचारी सामर्थ्य धीरे स्वरूप का ज्ञान होने पर महान् से महान् शान्ति के प्रगुबा बन सकते हैं। अपनी शक्ति के गौरव का ज्ञान हो जाने पर मनुष्य खुदामही धी-दुबुर धीरे दास बनकर कभी नहीं रह सकता। उसमें उन्नति की ऊँची धाकाभाए ठाठ मारने लगती हैं। तब मानव में प्रभूत-पूर्व परिधम करने की सामर्थ्य जागृत होती है।

घाब घाप क्या है इसका कुछ महत्त्व नहीं महत्त्व इस बात का है कि घाप शक्ति में क्या बन सकते हैं। कोई भी मनुष्य अपनी जमा-पूँजी को घाटे के व्यापार में लगाने को तैयार नहीं होगा। जो प्रगति नहीं कर रहा वह स्वयं अपने कार्य और परिणाम से सिद्ध कर रहा है कि उसने अपनी पूँजी को लाभ के काम में नहीं लगा रखा। मनुष्य के धन्यकरण में जो पूँजी है उसका मूल्य घन की पूँजी से बढ़ बढ़कर है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि मनुष्य उसका प्रयोग बरे और ऐसे काम में प्रयोग बरे जो लाभ का हो। जिस व्यक्ति के पास बैंक में पर्याप्त राशि जमा हो और वह समझता रहे कि वह अपना छोटा-सा कर्मा नहीं उभार सकता ठीक ऐसी ही स्थिति उस व्यक्ति की है जो यह समझे बैठा है कि वह धनकन है। हर एक व्यक्ति के धन्दर विभिन्न योग्यताओं की धपार पूँजी है परन्तु इस पूँजी का सामकारी कार्यों में जब तक उपयोग नहीं होता तब तक उसके द्वारा किसी नाम की प्राप्ति नहीं की जा सकती। इतनी धपार पूँजी रखने पर भी मनुष्य दीनतामय जीवन व्यतीत करे तो क्या उस पर धादधय न होगा ?

अपने घान्तरिक गुणों की पूँजी को व्यक्त करने एवं सामग्री कार्यों में उसका श्वास करने का क्या अपने कमी प्रयत्न किया है ? स्मरण रहे कि श्वास के बिना काम कभी हो ही नहीं सकता। अपने व्यक्तित्व को गौरवमय बनाइये। अपने व्यक्तियुक्त गुणों को उभारिए। अपने जीवन का एक निश्चित कार्य क्रम बनाइए, योजना नुसार कार्य कीजिए। इससे आपकी वे शक्तियाँ जो निष्क्रिय पड़ी थीं सक्रिय हो जाएँगी वह प्रतिभा जो प्रसुप्त थी, उदबुद्ध हो उठेगी। यह नहीं कि उन शक्तियों का आपको बिस्कुस ही ज्ञान न हो। किन्हीं विशेष अवसरों पर आपको उन शक्तियों का आभास तो अवश्य मिलता है, परन्तु अचानक विजली की तरह चमक कर उनका ज्ञान फिर विलीन हो जाता है। एक बार अन्त-प्रेरणा से उन शक्तियों को जागृत कर लो तो फिर ससार की ऐसी कोई बाधा नहीं जो आपका मार्ग रोक सके।

ऐसे अनेक उदाहरण हैं कि जिन व्यक्तियों ने अपनी महत्ता को पहचान लिया, वे हीन पदा से उठकर उन्नति कर गए हैं। वे समाज विरोधी कार्यों को छोड़कर समाज-हित के कार्यों में लग गए हैं। वे तेज-पुंज बनकर समाज के आकाश में प्रकाश फैलाते हैं और उनके प्रकाश से मनीषा, स्फुरण, सबोत्साह प्राप्त करके लोगों को आत्माएँ समन्त हुई और हो रही हैं। आत्म-शक्ति के अज्ञान और बिस्मरण का नाम ही दुबलता है अन्यथा मानव तथा दुबलता का कोई पारस्परिक सम्बन्ध नहीं क्योंकि मानव जड़ नहीं चेतन है, यही नहीं, वह सबश्रेष्ठ चेतन है।

अगणित विद्वान् विजयी, वीर तथा महान् पुरुष  
 जीवन में महान् कार्य करने में कब किस प्रकार सफल  
 हुए ? तभी जब उन्हें अपनी शक्तियों का ज्ञान हुआ  
 और उन्होंने उन शक्तियों का प्रयोग किया। जिस दिन  
 उन्हें अपनी गुप्त शक्तियों का ज्ञान हुआ उसी दिन वे  
 तुच्छ जीवन को त्यागकर महानता की ओर प्रसरण हुए।  
 केवल उन लोगों से ही उन्हें तथा प्राचीन जीवन की प्राप्ति  
 को जा सकती है जिन्हें अपने वास्तविक स्वरूप एवं  
 शक्तियों का ज्ञान हो चुका है। इस समय मानव संसार  
 को बकीलों डाक्टरों तथा राजनीतिज्ञों की इतनी प्राब-  
 ल्यकता नहीं मिलनी सत्प्रेरणादायक महान् पुरुषों की  
 है। प्रायः मानव-संसार को ऐसे महान् पुरुषों की प्राब-  
 ल्यकता है जो मानवता के आदर्शों के मूर्त रूप हों जैसे  
 अब्राहम लिंकन या।

संभव है भेदों से घिरे रहने के कारण ही आप अपने  
 आपको भी भेद समझने लगे हों परन्तु चिन्तन के कि-ही  
 क्षणों में आपको अपने वास्तविक स्वरूप की अनुभूति तो  
 अवश्यमेव होती होगी। यदि ऐसा नहीं हुआ तो आप  
 तनिक एकमात्र में चिन्तमग्न होकर अपनी आत्मा की  
 पुकार को सुनने का प्रयत्न कीजिए। केवल एक बार  
 आप उस ध्वनि को सुन सकें तो आपकी गुप्त-सुप्त  
 शक्तियाँ प्रत्यक्ष एवं जागृत हो उठेंगी। प्राधुनिक काल  
 का यही जीवन-व्यथन है कि मानव की प्रसुप्त शक्तियों  
 को जागृत किया जाना चाहिए। एक बार इस चिन्तयायी  
 को फूँकने की आवश्यकता है फिर इसे प्रपण्ड उबासी  
 बनते दर नहीं समझती। फिर उसी हीन मनुष्य के अन्त

से सिंह पराक्रमी कम-परायण प्रकट होता है। आत्म-विश्वास का सूय उदय होते ही निराशा-घकार और हीनता के यादस छिन्न भिन्न हो जाते हैं।

आपको विदित ही है कि गत सहस्रों वर्षों से भौतिकी एवं रसायन-शास्त्र के नियमों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। फिर भी घनेकों ऐसे नए वैज्ञानिक हुए हैं जो नवीन आविष्कारों में सफलता प्राप्त करके असीम ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। घरों पहले जो उपकरण घर आइजक म्यूटन के पास थे, वे ही टामस एल्वा एडीसन के पास भी थे, परन्तु उन्हीं उपकरणों का प्रयोग करके एडीसन ने घनेकों नए आविष्कार किए। हम प्रतिदिन पत्रों में किसी न किसी नवीन आविष्कार का समाचार पढ़ते हैं जिससे सिद्ध होता है कि मनुष्य की शक्तियों की कोई सीमा नहीं उनका वहीं अन्त नहीं। केवल उनको एक बार जागृत करके काय में लीन कर देने की आवश्यकता है।

यह है वह नवीन दसत जो मनुष्य को प्रबुद्ध कर देता है। वह उसे कार्य में नियोजित कर देता है। इसी के द्वारा मनुष्य अपने लिए उस सफलता के क्षेत्र को खोज करने में सफल होता है जो उसके लिए असंभव स्वप्न मात्र था। हमारे जीवन में जो असन्तोष का भाग है वह इस बात का प्रतीक है कि हम इतनी उन्नति नहीं कर पाए, जिसनी कि हमें करनी चाहिए। जब तक हमें असन्तोष नहीं प्राप्त होता, तब तक हम उसके लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहते हैं। जब हमारा अन्त-करण प्रेरणा को ग्रहण कर लेता है उसी क्षण हमें यह स्पष्ट

धनुमूर्ति होने लगती है कि हमारे भीतर एक योत्सवमय  
व्यक्तित्व गुप्त रूप से स्थित है जो यदि प्रकट ही जाए,  
तो कोई भी कार्य असम्भव नहीं रह जाता ।

बहुत-से लोग अन्त में किसी समस्कार या जादू की  
ही प्रतीक्षा में रहते हैं । ऐसा कोई समाधीन का चिरायु  
नहीं जो बिना ही शक्ति का न्यास ( Invest ) किये  
घापकी मनोकामनाओं को पूर्ण कर दे ।

यदि घाप भी घब तक किसी ऐसे जादू की शक्ति में  
है तो इस धम को घब दूर कीजिये । मनुष्य के बाहर  
कोई ऐसी शक्ति नहीं जो उसकी कामना-पूर्ति कर सके  
और आत्मा को तृप्ति दे सके । ऐसी शक्ति यदि कहीं है,  
तो वह आत्मा में ही है । मनुष्य को कुछ हीन बनाता  
है ? — आत्म प्रेरणा का अभाव । जहाँ आत्मप्रेरणा हुई  
कि मनुष्य की अज्ञान शक्तियों के शोभ सम जाते हैं  
और प्रथम बेग से प्रबाहित होते हुए जीवन के कड़े को  
यहाँ से जाते हैं । अन्त प्रेरणा की समय धारा ही आशा-  
आकांक्षाओं को मूल रूप प्रदान करती हुई आत्मा को  
तृप्ति एवं समतोष प्रदान करती है ।

हम ईश्वरीय शक्ति के एक घन हैं, उस शक्ति से  
बिम्ब या पृथक् नहीं । सम्पूर्ण ईश्वरीय शक्ति हमारे  
अन्दर उसी प्रकार घा सजती है जिस प्रकार पिंजरी के  
तार में करेट । आवश्यकता केवस तार को जोड़ने की  
है । अन्त प्रेरणा की स्फुरणा जिस दिन हुई वही दिन  
जीवन का मन्थ की ओर अग्रसर होना का दिन होना ।



## शरीर का अणु अणु सोचता है

विज्ञान की नूतन खोजों से यह सिद्ध हो गया है कि मनुष्य का मस्तिष्क ही विचार नहीं करता, अपितु उसका अद्भुत प्रायज्ञ प्रत्येक चीज हृण्ण अणु विचार करता है। वैज्ञानिक प्रयोगों में स्पष्ट करके दिखा दिया है कि मानवी देह के किसी अङ्ग को फाटकर यदि मारक विष के पास रखा जाय तो वह कटा हुआ अद्भुत उस विष से दूर होने की कोशिश करता है और किसी सामग्री को घीष के समीप रखन पर वह अद्भुत उससे पास आक-पित होता है।

शरीर का अणु अणु विचार करता है इसलिए प्राणा, हृण्ण हर अणु का दुःख का सारे मनुष्य शरीर पर रभाव होता है। डा० बवेसी ने बताया है कि आबम्य-ता के अनुसार अणु के शरीर में परिवर्तन आयाते हैं। अिराफ की मदन सम्प्री क्यों हुई? इसका कारण यह है कि अिराफ के पूर्वजों को अपनी सुराक के लिए पाम की प्रपेक्षा वेदों के पत्तों पर आधित रहना पड़ता था। उनके अणु-अणु विचारवान् थे उन्होंने उसकी चारों टांगों को लकवा उठाकर सम्प्रा कर दिया जिससे वह पत्तियों तक पहुँच सके। पत्तियों तक पहुँच न पहुँचा तो मदन को



सम्बन्ध करना धारम्भ किया और होते-होते वह एक सम्बन्धी हो गई। इसी प्रकार की आवश्यकता को अनुभव करते हुए हाथी के परमाणुओं ने उसकी नाक को बढ़ा कर उसे सूँड़ का स्वरूप दे दिया क्योंकि इतने ऊँचे शरीर के ऊपर सचे सूँड़ का भरती तक पहुँचना कठिन था। इसलिए सूँड़ के अग्रभाग में उँगली भी लगा दी गई कि जिससे वह वस्तुओं को पकड़ सके। शरीर के किसी भी अंग की वृद्धि की आवश्यकता बढ़ने पर अणु स्वयं अपने प्रकार में वृद्धि नहीं करते वे धीमे-धीमे ठेकी से अधिक-अधिक मार्गों में विभक्त होते जाते हैं और इस प्रकार उनकी संख्या बढ़ती जाती है। इसी से शरीर के उस अङ्ग का विकास होता है। डा० ब्रेसी का कथन है कि अणुओं के बढ़ने से उनमें संवेदन शीलता प्रत्यक्ष देखी जा सकती है। अणुओं में यह गुण उनके पूर्वजों से धारा है। पहले अणु अपने बाद में जाने वाले अणुओं को यह गुण उत्तुपधिकार में दे देते हैं। इस प्रकार यह गुण क्रमानुक्रम से बसा धारा है। हमारे विचार में शरीर भिन्न भिन्न अङ्गों का समूह है। जब हम ऐसा सोचते हैं तो हम यह मान कर चलते हैं कि शरीर का हर अङ्ग स्वाधीन है और अपने अङ्गों से पृथक् कार्य करता है। परन्तु याम्बविक्रता यह है कि शरीर अणुओं का संगठित पूज-मात्र है। इसके अणु अणु में स्वाधीन रूप से सोचने की शक्ति है वह विचार करता है। सारे शरीर की रचना में वे संगठित होकर कार्य करते हैं।

सम्पूर्ण अङ्गों का अधिनायक मन है—इसे ही 'मैं' कहते हैं। इसी के अनुशासन में सब अङ्ग चलते हैं।

शरीर स्वस्थ है या रोगी, इसका विचार यही अज्ञों को देता है। यह 'मैं' चाहे तो अज्ञ प्रत्यक्ष मैं आत्मा का संचार करे और चाहे तो उन्हें निराशा से भरकर अकम्प्य बना दे। 'मैं' स जो विचार या भाव चलते हैं वे सबक सब जीवाणुओं पर अपनी गहरी छाप डालते हैं।

चल्य-चिकित्सकों का कथन है कि युद्ध में विजयी होने वाले पायल सैनिकों के व्रण पीछता से भर जाते हैं, अपेक्षा उनके कि जो साधारणतया किसी कारण से पायल हुए हों और पराजित सेना के पायलों के व्रण तो बहुत ही देर बाद भरते हैं। मन का उत्साह हर्षोत्फुल्लता और अपनी जीत का विचार शरीर को नीरोग करने में सबसे अधिक सहायक है।

यह एक सत्य है कि प्रत्येक जीवाणु मस्तिष्क का ही एक सधु, परन्तु महत्वव्यापी अणु है। हर एक जीवाणु मानो एक छोटा-सा पावर स्टेशन है जिसका तार मस्तिष्क से जुड़ा हुआ है। अतः मन में धार्द्रि काय, ईर्ष्या अथवा घृणा को छोटी-से-छोटी माबना फौरन अणु-अणु से प्रकट होने लगती है। मन के दुःख से हर एक अणु दुःखी होता है। मन के हर्ष से हर एक जीवाणु हर्षित होता है। उसके समथन के लिए प्रमाण की आवश्यकता नहीं क्योंकि हम जानते हैं कि मन जब आत्मा उत्साह और हर्ष से भरा हुआ होता है तब सारा शरीर पून-सा इसका तथा मीरोप दिनाई पड़ता है उस समय उसकी काय-शक्तता भी बहुत अधिक बढ़ी हुई होती है। मन यदि निराशास्पकार से बना हुआ होता है तब मन की काय-शक्ति कुण्ठित हो जाती है तब उसका उत्साह

मारा जाता है उसका उत्साह समाप्त हो जाता है।  
शल्य चिकित्सकों ने धन्वेपण करके बताया है कि

कई नासूर केवल मन की निराशा से उत्पन्न होते हैं।  
जिनके शरीर नासूर के भय से रहित हों, वे भी यदि  
निराशा या विन्तानूर रहें तो नासूर की धारणा सम  
झनी चाहिए। इस श्लोक का समर्थन एक उदाहरण से  
हो जाता है कि युद्ध में जिन सोंगों के प्रियजन काम धाने  
हैं उनमें दोक ही नासूर का कारण बन जाता है।

धमकी के घनेकों रोग धपच महत् रोग हृदय-रोग  
या मस्तिष्क के रोग—ये प्रायः ईर्ष्या एवं घृणा के कारण  
अन्म सेते हैं। इस प्रकार की घूपित भावनाओं द्वारा  
मनुष्य के लह में एक प्रकार का जहर-सा निरन्तर घुलने  
लगता है। उससे शरीर के घस साहस तथा उसकी कर्म  
ठठा को कीड़ा लग जाता है। किसी भी रोगी के स्वस्थ  
होने में निराशा एवं एकाकीपन से अधिक हानिकर घीर  
कुछ नहीं। विचार करना चाहिए कि मन में निराशा  
धपवा दोक की भावना समान भावना तक ही सीमित  
नहीं रहता। धपिनु उससे धारोग्य धीरे-धीरे का लय  
होता है। विन्ता एवं निराशा धीरे-धीरे करके शरीर के  
धयुओं के साहस को उनके धारोग्य को मष्ट कर देती  
हैं। इनसे शरीर में गड़बड़ी फैल जाती है उसका क्रम  
विस्तृत हो जाता है। किसी प्रिय व्यक्ति की मृत्यु की  
खबर सुनकर कुछ सोंग बेहोश हो जाते हैं। इसका कारण  
क्या है? इसका कारण यही है कि दोक केवल हृदय पर  
ही नहीं शरीर पर भी बहुत घुरा प्रभाव डालता है।  
शरीर घृष्टित हुआ इसका कारण वास्तव में यह है कि

धरणी का धरणी-धरणी मूर्छित हो गया। इसके विपरीत किसी हृदयक समाचार से मन ही उत्फुल्ल नहीं होता, बल्कि मन भी खिल उठता है। मन प्रसन्न होते ही धरणी का धरणी-धरणी, नहीं नहीं, प्रत्येक धरणी एक नई स्फूर्ति एक नई हिम्मत, एक नए बल का धनुभव करने लगता है।

डा० क्वेसी ने अपने परीक्षणों द्वारा यह सिद्ध किया है कि प्रत्येक जीवाणु में अत्यन्त छोटे आकार के जीवाणु-समूह निरन्तर विचार का काम करते रहते हैं। मनुष्य के शरीर का नियन्त्रण उस छोटे-से जीवाणु के बल में होता है। इससे भी बढ़कर कुछ प्रति प्राधुनिक वजानिकों का तो कथन है कि शरीर के प्रत्येक धरणी में स्थित जीवाणु का अपना पृथक् मस्तिष्क होता है। वह मस्तिष्क हर एक धरणी की चेष्टाओं तथा काय-कलापों पर नियन्त्रण रखता है। आमाशय यकृत प्लीहा (तिस्ती) फुफ्फुस व हृदय ऐसे ही मुख्य विचार-केन्द्र या मस्तिष्क हैं जो मुख्य मस्तिष्क से सम्बद्ध हैं। शरीर का एक-एक धरणी अपने समूह (Group) को रक्षा, विकास तथा कार्य-शोभता की वृद्धि के लिए प्रयत्न करता है। उदाहरण के लिये शर्करा (Sugar) धनामे का काय करता है। वह शरीर के विषैले अंशों को दूर करता है। इस मद्द्द पूरा काय में यकृत का प्रत्येक परमाणु प्रतिपल घुटा रहता है। ज्यों ही रक्त में विषैले अंशों की कुछ मात्रा प्रकट होती है, त्यों ही आमाशय तथा पाचन-संस्थान के धरणी धरणी दुर्बल हो जाते हैं। उनकी कार्य-शक्ति कुण्ठित हो जाती है। तब आजन का पाचन एवं समीकरण (Ani-

mulation) मसी भाति नहीं हो पाता। तब उनमें बदबू  
 तथा विपैसा ग्रंथ उत्पन्न हो जाता है। रक्त उस ग्रंथ  
 को छुड़ करने का प्रयत्न करता है परन्तु वह उस ग्रंथ  
 की अधिकता से भरकर स्वयं दूषित हो जाता है। उस  
 समय शरीर के सभी अणुओं की व्यवस्था बिगड़ जाती  
 है। तब हृदय की गति धीमी हो जाती है। मस नाडियाँ  
 बसहीन क्लान्त और बिडबिड़ी हो जाती हैं। कार्य के  
 प्रति उनमें अरुचि पैदा हो जाती है। तब शरीर के सभी  
 जीवाणु बल के लिए बावसा मचाते हैं। जीवाणुओं के  
 दुःखभरो पुकार मस्तिष्क तक पहुँचती है। वह गमीरता  
 से विचार करने लगता है। फिर मनुष्य किसी डाक्टर के  
 पास पहुँचता या यदि उसे किसी दवा का पता होता है  
 तो वह उसका प्रयोग करता है। इसमें भी यदि वह धैर्य  
 पूरक दवा करता है तो धीघ्र नीरोग हो जाता है और  
 यदि बिस्तानुर होकर बैठरह दवाइयों के पीछे मागता है  
 अल्दी-अल्दी बदस-बदस कर दवाएँ खाता या बदस-बदस  
 कर डाक्टरों को दिखसाता है तो उसका शरीर नीरोग  
 होने की अपेक्षा और भी रोगान्नास्त और दुबस हो जाता  
 है। कई बार तो ऐसा भी देखा गया है कि मनुष्य  
 डाक्टरों तथा दवाओं में इतना धन और समय व्यय कर  
 जाता है कि उसके पास पोषक भोजन के लिए पैसा  
 नहीं रहता और बिधाम करने को समय नहीं बचता।  
 मनोवैज्ञानिक बिचित्रता इसी विचार पर प्राथित है  
 कि सोचना केबस मस्तिष्क का ही कार्य नहीं, अपितु  
 शरीर का एक-एक जीवाणु भी विचारशील है। धर्म्य  
 लोगों के हाथों की उँगलियों के ग्रंथ माग पढ़ने का काम

करते देखे जाते हैं। इससे यही प्रत्यक्ष स्पष्ट होता है कि उनका मस्तिष्क उनके करारा में होता है।

देखना सुनना छूना सूँघना चखना घाना-जाना, सोना दबास सेना आदि सम्पूर्ण चेष्टाएँ सारी-की-सारी क्रियाएँ जीवाणुओं द्वारा ही सम्पन्न होती हैं। हम प्रत्येक पग घाये बढ़ाते हुए नहीं विचार करते अपितु प्रत्येक पग घागे बढ़ाते हुए विचार करता है। सुपुति या निद्रावस्था में मस्तिष्क की सम्पूर्ण क्रियाएँ घन्द रहती हैं। उस समय हृदय की 'सुबडप' को कौन जभाता है? हृदय के विचारपीस प्रत्येक स्वयं मस्तिष्क रखत हैं। वे ही सुपुति में भी हृदय को स्वाभाविक क्रिया को चालू रखते हैं। प्रत्येक घग के जीवाणुपुञ्ज अपनी सामान्य क्रियाएँ अपने प्रणुओं द्वारा जसात जसे जाते हैं। दुपट-नाओं में जब मस्तिष्क पर चाट लगती है और उसके घनेकों तन्तु टूट जाते हैं तब भी यह देखा गया है कि मस्तिष्क की विचार-शक्ति पर बहुत अधिक घसर नहीं होता। प्रायः मनुष्य के घंग अपना-अपना काय ठीक से निभाते जसते हैं। एक जजानिक ने एक मनोरञ्जक परीक्षण से इस सिद्धान्त की पृष्टि की है—

एक मेंडक का सिर काटकर उसकी टांग पर तेजाब की एक बूँद डालकर यह देखा गया कि वह दूसरे पैर से टांग पर पड़ी तेजाब की बूँद को हटाने का प्रयत्न करता है। इससे प्रकट है कि विचार-शक्ति मस्तिष्क तक ही सीमित नहीं, अपितु पागेर का प्रणु प्रणु विचार करता है।

मस्तिष्क का पागेर में एक छोटा-सा स्थान है। उसके

milation) भली भाँति नहीं हो पाता । तब उनमें बदरू  
 तथा विपैसा प्रथम उत्पन्न हो जाता है । रक्त उस प्रथम  
 को दुरुद्ध करने का प्रयत्न करता है, परन्तु वह उस प्रथम  
 की अधिकता से भरकर स्वयं दूषित हो जाता है । उस  
 समय शरीर के सभी अणुओं की व्यवस्था बिगड़ जाती  
 है । तब हृदय की गति धीमी हो जाती है । मस नाड़ियाँ  
 बलहीन क्लाम्त और चिड़चिड़ी हो जाती हैं । कार्य के  
 प्रति उनमें अरुचि पैदा हो जाती है । तब शरीर के सभी  
 अंगों बल के लिए वायु माँगाते हैं । अंगों की  
 दुर्बलता पुकार मस्तिष्क तक पहुँचती है । वह गंभीरता  
 से विचार करने लगता है । फिर मनुष्य किसी डाक्टर के  
 पास पहुँचता या यदि उसे किसी दवा का पता होता है  
 तो वह उसका प्रयोग करता है । इसमें भी यदि वह धैर्य-  
 पूर्वक दवा करता है तो शीघ्र नीरोग हो जाता है और  
 यदि चिन्तागुरु होकर बेतरह दवाइयों के पीछे भागता है  
 बल्बी-बल्बी बदल-बदल कर दवाएँ खाता या बल-बदल  
 कर डाक्टरों को दिखलाता है तो उसका शरीर नीरोग  
 होने की अपेक्षा और भी रोगाक्रान्त और दुबल हो जाता  
 है । कई बार तो ऐसा भी देखा गया है कि मनुष्य  
 डाक्टरों तथा दवाओं में इतना धन और समय व्यय कर  
 जाता है कि उसके पास पोषक भोजन के लिए पैसा  
 नहीं रहता और विद्यालय करने को समय नहीं बचता ।

मनोवैज्ञानिक चिकित्सा इसी विचार पर आधारित है  
 कि साधना केवल मस्तिष्क का ही कार्य नहीं, अपितु  
 शरीर का एक-एक अंग भी विचारशील है । अर्थात्  
 लोगों के हाथों की उँगलियों के अंग भाग पढ़ने का काम

करते देखे जाते हैं। इन्में नही प्रत्यक्ष स्पष्ट होता है कि सनका मस्तिष्क उनके कण्ठ में होता है।

दबना मुनना घृता नूथना चबना घन-दमना सोना श्वास सेना आदि मनुने केष्टर, साथे को साथे श्रियाएँ बीबानुषों द्वारा हो नन्ना होती है। इन प्रत्येक पग घागे बढ़ते हुए नहीं बिचार करते मनु घनु प्रत्येक पग घागे बढ़ाते हुए बिचार करता है। मनुनि या निशाबस्था में मस्तिष्क की मनु श्रियाएँ दन्द रखी है। उस मनप हृदय की 'सुरदन' को कौन चमका है? हृदय के बिचार-गोस घनु स्वयं मस्तिष्क मग्न है। वे ही मुपुनि में ना हृदय को स्वानाबिक श्रिया का चाल रखते हैं। प्रत्येक पग क शोबादुन्द घनमी सनान्य श्रियाएँ अपने घणुषों द्वारा चमका चमे जाते हैं। दुपट-गामों में जब मस्तिष्क पर जाट मानी है घौर उसके घनेको सनु टूट जाते हैं तब भी यह देखा गया है कि मस्तिष्क की बिचार-शक्ति पर सङ्ग मपिक घमग नहीं होता। प्रायः मनुष्य के घग घनना-घनना काय ठीक से निमाने चसते हैं। एक बजानिक ने एक मनोरञ्जक परी सप से इस सिद्धान्त की पुष्टि की है—

एक मेंदक का सिर काटकर उसकी टाँग पर तेजाब की एक बूँद हासकर यह देखा गया कि वह दूसरे पैर से टाँग पर पड़ी तेजाब की बूँद को हटाने का प्रयत्न करता है। इससे प्रकट है कि बिचार-शक्ति मस्तिष्क तक ही सीमित नहीं, अपितु शरीर का घणु घणु बिचार करता है।

मस्तिष्क का शरीर में एक छोटा-सा स्थान है। उससे



जिम्मे काम भी सीमित है। शेष सारे शरीर के धन प्रत्यंग का काम मस्तिष्क को ही नहीं करना पड़ता। शरीर के धंग प्रत्यंग की अपनी अपनी प्रयोगशाला और अपने अपने कारखाने हैं जो मस्तिष्क को तंग किए बिना अपने धाप बसते रहते हैं। उन संस्थानों के बुद्धिमान जीवाणु स्वयं ही अपने-अपने कार्य में तत्पर रहते हैं।

हर एक जीवाणु दूसरे जीवाणु पर प्रभाव डालता है। एक मनुष्य भोजन करने बैठता है। उसी समय उसे किसी प्रियजन की मृत्यु का खार मिलता है। उसे पढ़कर वह सन्न रह जाता है। उसकी भूख समाप्त हो जाती है। इससे प्रकट है कि मस्तिष्क ही केवल नहीं विचारता अपितु प्रत्येक धंग के धणु-धणु पर विचार का प्रभाव डालता है।

किसी भय या रोग की घातका घादि से शरीर में यह प्रतिक्रिया होती है कि शरीर का वह भाग सकुचित होने लगता है। क्यों?—इसका कारण प्रत्यक्षतः यही है कि उस धंग के परमाणुओं तक वह विचार पहुँचा है, जिससे वहाँ सिकुड़न हुई।

एक स्वस्थ सुन्दरी नवयुवती को किसी न भ्रम में डाल दिया कि उसके माता पिता को क्षय का रोग था। वह, फिर क्या था? वह बेचारी बिस्ताप्रस्त रहने लगी। पीठ श्लेतु में जरा-सी ज़ाँसी घाने पर उस क्षय का भ्रम हो जाता वह काँप उठती। यह धूँककर उसके रग को देखती उसमें क्षय के फीटाणुओं की खान करती। उसकी पिन्ता उसके पाचन-संस्थान तथा धन्य धंगों की स्वाभाविक क्रिया में बाधा पहुँचाने लगी जिससे उसका स्वास्थ्य गिरने लगा। उसके बेहरे का रंग पीला पड़

श्यकता है। जब घाप गिन्नास के पानी में मीठा डालेंगे, तो वह तो मीठा होकर ही रहेगा। संसार की कोई भी शक्ति उसे मीठा होने से नहीं रोक सकती।

आ व्यक्ति आपको मिथन दिखाई देगा वह मन से निर्धन होगा। यदि मन समृद्धि की सहरोँ में हिमोरेँ देने लगे तो मिथमता की मखीनता तुरन्त वह जाएगी। जिसके मन में समृद्ध होने की तरंग ही नहीं उठती, उसके पास धन-संपत्ति क्या आएगी? जो मन सं दरिद्र है उसके लिए संसार क धन मण्डार है ही नहीं। यदि है भी तो वह उनसे कुछ नहीं से पाता क्योंकि वह उन्हें धपना समझता ही नहीं। उन पर वह धपना धबिकार ही नहीं मानता। इसलिए मिथ ! सबसे पूब मन में समृद्धि के बिचार समृद्धि की प्रबल आकांक्षा, समृद्धि की तड़प साने को आवश्यकता है। यदि समृद्धि को घाप काम्य नहीं समझत यदि उसे घापमे सदय ही नहीं बनाया तो वह किस प्रकार घापक पास चली धाए ?

प्रबल इच्छा-शक्ति धीर विस्वास क बल पर घाप धपने लदय के धमुक्म साधनों को धपमाकर निरन्तर बिचारपूर्बक धम में जुट धाएँ सन्धे किस से प्रयत्न करें, तो जितनी लक्ष्मी को घापकी इच्छा है, उससे भी अधिक वह घाप पर धरसमे लयेगी।

पुरानी बदकियानूसी बिचारधारा के सोग धभी तक समृद्धि का सम्बन्ध भाग्य रेखा से जोे हुए हैं परन्तु धाज के वैज्ञानिक युग में नवीन बिचारधारा के सोय समृद्धि का सीधा सम्बन्ध धम से मानते हैं। जिस वस्तु का बीज घापके हृदय में है वही पुष्पित पस्तकित होगी।

यदि आपने धन-संपत्ति का बीज अपने हृदय में बोया है, तो उसे बढ़ाइए। उसे सींचिए, उसे साद दीजिए और आप देखेंगे कि समय पाकर वह साकार महाबृक्ष बन जाएगा। आप खेत में बीज फेंककर धाराम से सो जाइए, तो आप की खेती क्या होगी? धर्म का समृद्धि से घट्ट सम्बन्ध है। आपको मनमर धर्म की आवश्यकता है प्रतिभा तो एकाग्र सर ही प्राप्त होती है। मन की गहराइयों में उतर जाइए। विचार कीजिए कि किस प्रकार का काय आपकी प्रतिभा रुचि क्षमता तथा योग्यता के अधिक अनुकूल है। धर्म उसी कार्य को अपने लिए चुन लीजिए। उसी काय में पूरी लगन से निष्ठा से सकल्प से मन प्रसाद से, सौम्यता से धैर्य से निरन्तरता से लग जाइये। उसके पद को सारी क्रियाएँ कीजिए उसके पथ की सब बाधाओं को हटाइए उसके सहायक व्यक्तियों से मिलिए उन्हें इकट्ठा कीजिए। उस काय के साधनों को जुटाने में कुछ भी न उठा लीजिए। फिर विधिपूर्वक सारे कार्य को सम्पन्न कीजिए। सब बही आपकी सम्पत्ति है। सम्पत्ति शब्द का यही अर्थ है। काय को सम्पन्न करना ही सम्पन्नता है। जो काय को सम्पन्न नहीं कर पाता, बहो विपन्न है, दुःखी है दलित है गरीब है सांछित है अपमानित है। जो धर्म-संपत्ति-क्रियानिष्पत्ति में बृहत्स है उसकी समृद्धि का माग कौन रोक सकता है? जो दीपमूर्त्ती है धातु का काम कम पर दासता है ठोसा-ठाना रहता है जिसका कोई सध्य नहीं कोई कार्यक्रम नहीं, जो केवल माग्य के भरोसे बठा रहता है उसे सद्यमी पूजा की दृष्टि से देसती है। वह घनाड़ी है। समृद्धि उसके निकट नहीं घाती।

वह तो अपने हाथ में बचे-बुचे पोड़े-बहुत पैसे को भी बधा नहीं सकता, अधिक धनी होने की तो बात ही क्या ?

समृद्ध होना आपके स्वभाव है। जब तक आप अपने को दरिद्रता के अधीन मानते हैं अपने को उसके लिए ही बने मानते हैं, उसका धामे अपने को विषय समझते हैं तब तक वह आप पर अपना प्रभाव जमाए रहेगी। जब आप उसे दुस्कार कर, धिक्कारकर मन से घोर तब पर से बाहर करने को उद्यत हो जाते हैं तब वह किसी तरह आपके यहाँ नहीं टिक सकती।

पश्चिमी रेगिस्तान के लोग बासू में छोटे-छोटे घरों बनाकर जीवन काटते हैं। बहुत हुआ तो दो-एक पशु प्राप्त किए। वे नहीं जानते कि जिस घरती पर वे रहते हैं, उसी के भीतर समुद्र समियों के घातक भंडार भरे पड़े हैं। यदि वे अपनी बुद्धि का प्रयोग कर पाएँ तो वे समार के समुद्र देशों में हो पाएँ पर महानगर व गरीबी के कष्टों में ही सारी आयु काट देते हैं। ठीक इसी प्रकार वे सोच निरन्तर निर्भन बने रहते हैं, वो यह नहीं जान पाते कि उनके अन्तर इतनी साम्यता और क्षमता के समुद्र भंडार भरे पड़े हैं। अतः इस बात की नितांत आवश्यकता है कि आप अपनी योग्यता और क्षमता को पहचानें। अपने आपको पहचानें। यह मस्ती से जस्ती जान सेने में ही आपका कल्याण है कि आपका जन्म किस वस्तु के निर्माण के लिए हुआ है।

उक्त मनुष्य के निवासियों से कुछ ही दूरी पर बुद्धिमान लोग बसते हैं जिन्होंने अपनी प्रज्ञा के प्रयोग से अपनी घरती को अत्यन्त उपजाऊ बना रखा है। उनके

उद्यान मन्दमवम के समान सहस्रहाते हैं। उनके मुखी जीवन से बड़े-से-बड़े समृद्ध सोगों को भी ईर्ष्या होती है।

कोई मनुष्य वन में से होकर अपने सक्ष्य स्वत को जा रहा था। वह माग में भटक गया। उसके पास दिशा दशक यत्र न था। ठीक दिशा का ज्ञान न होने के कारण वह बार बार पककर काटकर फिर से एक ही स्थान पर घा जाता था। अपने माग का उसे नाम न रहा। अन्त में थका-हारा वह भूमि पर बैठ गया और चिन्ता में पड़ गया कि उस वन से बाहर कैसे निकले।

ठीक यही दशा आज असक्ष्य ब्यक्तियों की है। उनके पास दिशा स्थाने ज्ञाना यत्र नहीं। जो जीवन में उनका सही माग-दर्शन कर सके ऐसा कोई ब्यक्ति नहीं। वे जीवन के निश्चित सक्ष्य को न पाकर निराशा के जगस में भटकते भटकते पक कर चुप बैठ जाते हैं।

हम चाहते तो कुछ हैं और पग उसके विपरीत दिशा में रगते हैं। यदि हमारे चिन्तन और कम में सामंजस्य (तासमेस) स्थापित हो जाए तो हमारी प्रगति अनिवाय है।

आप किसी ऐसे नवपुवक की कल्पना कीजिये जो मेडीकल कासेज में मर्ती हुआ है और उसे अपने डाक्टर होन का तनिक विश्वास नहीं। उसका मन सन्देह से भरा है कि वह शायद ही कभी डाक्टर की योग्यता को प्राप्त कर सकेगा। भला बताइए कि ऐसा नवपुवक क्या कभी डाक्टर बन पायेगा? भसे ही उसके सापियों की तथा उसकी याप्यताओं में कुछ भी अन्तर न हो भसे ही उसमें कुछ भी कमी न हो परन्तु अपने ऊपर सन्देह

घोर अविश्वास ही ऐसी कमियाँ हैं, जो उस युवक को धर्म्य साधियों की अपेक्षा, हर बात में पीछे रखतीं। अतः प्रगतिशील व्यक्ति को सन्नेह और अविश्वास का साथ छोड़ देना चाहिए। समझदार व्यक्ति सदा अपने ऊपर दृढ़ विश्वास रखकर लगातार अपने पथ पर धीरे धीरे बढ़ाते हुए धमे आया करते हैं।

अपने अित्त में सदा इस बात को दोहराएँ—सदा इस मन्त्र का जाप कीजिए—

“मैं ईश्वर-पुत्र हूँ। संसार की समस्त धन-सम्पत्ति ईश्वर की है। वही इसका स्वामी है। मैं ईश्वर-पुत्र हूँ। संसार की सारी धन-सम्पत्ति मेरी बपीती है। मेरे लिए सब प्रकार की धन-सम्पत्ति के द्वार खुले हैं। मैं दरिद्रता से जीवन व्यतीत न करूँगा। मैं गरीबी का साधन अपने ऊपर कदापि न रहने दूँगा। मैं अपने जीवन की कामा पसट कर सकता हूँ। मैं अवसक्तिमान् ईश्वर की सन्तान हूँ। उसकी सत्तियाँ मेरी हैं। मैं उनका प्रयोग करूँगा।”

बाइबिल में एक मन्त्र आया है—“परमेश्वर मेरी सहायता करने बांसा है। फिर मुझे कोई भी अभाव कभी भी कष्ट नहीं वे सकता।” इस मन्त्र को सदा दोहराते रहना चाहिए। भाषा की भावना में भरपूर अन्तःकरण लेकर प्रत्येक दिन के कार्य का आरम्भ कीजिए। संसार की प्रत्येक उत्तम वस्तु परमेश्वर से उसी तरह माँगिये जैसे पुत्र अपने पिता से माँगता है। वह तुम्हें अवश्य प्राप्त होगी अवश्य प्राप्त होगी।

एक युवक था। कुछ समय पहले वह अत्यन्त मिथ मता का जीवन व्यतीत कर रहा था। कुछ दिन हुए,

जब उससे नोट हुई तो उसने बताया कि उसके जीवन का कायापसट हो चुका है। उसके पास अपना मुन्दर बगसा है, अपनी मोटर है और सुख की सब सामग्रियाँ और सुविधाएँ विद्यमान हैं। पूछने पर उसने बताया कि उसके मन में उसी दिन से विचित्र परिवर्तन होना प्रारम्भ हो गया जिस दिन उसने यह जान लिया कि गरीबी अपने हाथों की बनाई हुई है। उसी दिन उसने अपने मन से गरीबी को जड़ से उखाड़कर फेंक दिया। उसके स्थान पर उसने समृद्ध बनने के सद्गुण और आत्मविश्वास को हृदय के आसन पर बिठाया। अल्पकाल में ही उसके सब मनोरथ पूर्ण होने शुरू हो गये।

सतत आशाप्रयत्न ही समृद्धि एवं सुख की जननी है। निराशा मन की असमृद्धि या असम्पन्नता का ही दूसरा नाम है। समृद्ध होने के सद्गुण को हृदय में बिठाकर जब आप निराशा और असफलता को सतकारेंगे तो वे पीछे ही दूर भाग जाएंगी वे फिर टिक नहीं सकतीं।

समृद्धि के माग में सबसे बड़ी बाधा यह विचार ही है—“मैं दरिद्र रहने के लिए पैदा हुआ हूँ।” जहाँ इस विचार को आपने हृदय से निकाल दिया, वहाँ स्वयं समृद्धि के स्वप्न उमड़ा स्थान से सगे। तब उनके साथ जब आपकी कार्यशक्ति जुड़ेगी, तो आप संसार के समृद्ध व्यक्ति बन जाएँगे इसमें शक भी सन्देह नहीं।



## प्रभु से अमेद

संसार की महान्-से-महान् शक्तियों का जन्म-स्थान हृदय है। हृदय में ही वे संकुरित होती हैं, वहीं वे पस्त वित घोर पुष्पित होती हैं। एक छोटा-सा बीज जैसे महान् बटबुल में परिणत हो जाता है। उसी प्रकार एक नन्हा-सा विचार—एक सूक्ष्म-सी कल्पना महान् सामर्थ्य धीरे ऊँची-से-ऊँची योग्यताओं के रूप में परिणत हो जाती है। इसी बात को दूसरे शब्दों में ईसामसीह ने इस प्रकार कहा था—

“स्वर्ग का साम्राज्य तुम्हारे अन्तःकरण में ही है।”

परमेश्वर सर्वशक्तिमान् है वह सब शक्तियों का मूल स्रोत एवं मूलधार है। चिन्तन की शक्तियों में हम उससे जब अपना अनेक सम्बन्ध स्थापित करते हैं, तब उसकी शक्तियों का प्रबल स्रोत हमारे अन्तःकरण में प्रवाहित होने लगता है। बिजली के पावर हाउस से जब एक तार फुड़ जाता है तब उससे बिजली को धारा (Current) प्रवाहित होने लगती है। फिर वह छोटा-सा तार बड़े-बड़े यन्त्रों को संघातित करने में समर्थ होता है। उस पावर हाउस से सम्बन्ध बिच्छेद होसे ही उस तार में कुछ भी शक्ति नहीं रह जाती।



प्रभु के सान्निध्य से मनुष्यों में विचार की पवित्रता आती है। विचारों की पवित्रता मन को एकाग्र बनाती है। एकाग्र मन जिस सत्य को पूर्ण करना चाहता है, उस पर पूरी सभ्यता की शक्ति जुट जाती है। सब कार्य सम्पन्न हो जाता है और मनुष्य सफल बन जाता है। फिर उसका मद्य फैल जाता है।

अकस्मात् मनुष्य उदास होता है। आश्रय भ्रष्ट करने में स्थित प्रभु से सम्बन्ध जोड़े रहता है वह कमी अकस्मात् नहीं होता वह कमी उदास नहीं, अतएव वह निराश भी नहीं होता। आशापूर्ण व्यक्तित्व काय अधिक कर पाता है। वह अधिक सफल होता है।

ईश्वर की दिव्य शक्ति से सम्बन्ध जोड़ने पर मनुष्य में दिव्यता आती है। ईश्वर विराट है, विराट् स अभेद होने पर मनुष्य स्वयं विराट् बनता है। विराट् बनने पर उसकी लुब्धता मिट जाती है वह महान् बन जाता है। महान् व्यक्ति कमी धन-सम्पत्ति से वंचित नहीं रहता।

ईश्वर निष्काम है परम सुन्दर है। उसका चिन्तन और ध्यान करने से मनुष्य में सौन्दर्य आता है। पुण्डरीकाक्ष का ध्यान करने से मनुष्य स्वयं पुण्डरीकाक्ष बन जाता है।

मनुष्य ईश्वर का अंग है। ईश्वर का ज्ञान किसी-न किसी रूप में उसके भीतर विद्यमान है। जब ईश्वर सृष्टि रचियता है तो ईश्वर का अंग किसी न किसी पशु का रचियता अवश्य है। कुम्हार का बेटा कुम्हार से बड़िया बतल बनाने का प्रयत्न करता है, फिर हम प्रभु की यनाई सृष्टि को अधिक सुन्दर बनाने

का प्रयत्न क्यों न करे ?

सृष्टि की रचना सदा निर्बाध गति से चलती रहती है। यह निरन्तर प्रबलमान स्रोत है, जो कमी नहीं सकता। जो मनुष्य कर्म नहीं करता चाहता, वह उस प्रवाह के माग में बाधा है वह एक रोड़ा है। सृष्टि का प्रवाह उसे एक दिन बहाकर ले जाएगा।

जब हम ईश्वर से अपने को पृथक् मान लेते हैं, तो अपने आपको बड़ मान लेते हैं। चेतन से पृथक् होकर हम अचेतन पदार्थ बन जाते हैं। तब हमारी सारी शक्ति, सारी रचनाशक्ति, सम्पूर्ण क्रियाशीलता नष्ट हो जाती है। तब हम विश्वमी के एक कुम्हे हुए बल्ब की तरह हो जाते हैं जो बेलने में तो बल्ब ही है पर प्रकाश देने की उममें शक्ति नहीं होती।

आत्मा का परमात्मा से अभेद सम्बन्ध जोड़ने का ध्येय है सर्वोत्तम शक्ति-श्रोत से अपना तार जोड़ना। उस शक्ति से सम्बन्ध जोड़ने पर सांसारिक समृद्धि एक छोटी बात रह जाती है। एक व्यक्ति के पास एक लाख रुपया हो तो यह प्रदत्त हो ध्येय है कि उसके पास एक हजार रुपया है या नहीं। इसी प्रकार उस सर्वोत्तम शक्ति के होने पर यह प्रदत्त ही तुच्छ प्रतीत होता है कि उस व्यक्ति में धन-सम्पत्ति को कमाने की शक्ति है या नहीं। यह शक्ति तो उसके लिए एक साधारण बात होती है जो घनायास ही होती जाती है।

धनु-विम आराम की प्रभु में प्रलय निद्रा थी। वह सृष्टि के कण-कण में उसको व्याप्त मान कर मनुष्यमात्र की सेवा में लीन रहता था। एक दिन स्वप्न में उसके

पास एक देवदूत आया। वह देवदूत ईश्वर के प्रिय व्यक्तियों को सूची बना रहा था। भ्रू बिन आदम ने सोचा कि उसका नाम उस सूची में नहीं होगा, क्योंकि उसने ईश्वर की कभी पूजा तो की नहीं। दूसरी रात को वह देवदूत पुनः लिखाई दिया। भ्रू बिन आदम ने उस वह सूची दिखाने का आग्रह किया। सूची को देखकर भ्रू बिन-आदम अत्यन्त अक्षित हुआ, क्योंकि उसमें सबसे ऊपर स्वर्णिम अक्षरों में लिखा था—“भ्रू बिन आदम”।

जो लोग आत्मा को ही नहीं मानते, वे ईश्वर से क्या सम्बन्ध स्थापित करेंगे। उन्हें पहले प्रथम सीढ़ी पर चढ़ना चाहिए। पहले आत्मा को पहचानिए। इस शरीर के अन्दर जो “मैं” है, वह शरीर से पृथक् कोई तत्त्व है। वह निकल आता है तो शरीर बकार पड़ा रह जाता है। वही आत्मा है जो “मैं” है। उसका साक्षात्कार कीजिए। फिर उसका सम्बन्ध उस सब शक्तिमान् प्रभु से जोड़िये।

परमेश्वर से सम्बन्ध होते ही मनुष्य का भय जाता रहता है। सब शक्तियों का भण्डार जिसका धरना है, वह क्यों डरे और किससे डरे? सबमें उसका प्रभु व्यापक है, फिर वह किससे घृणा, भय या द्वेष करे? प्रभु के साथ सम्बन्ध स्थापित करते ही आत्मविश्वास त्रिगुणित हो जाता है। संसार के महानतम काय उन्हीं लोगों के हाथों सम्पन्न हुए हैं जिन्होंने ईश्वर से सम्बन्ध स्थापित किया। म्यूटन अपने आपकी प्रभु का एक छोटा-सा बातक मानता था। एडीसन का प्रभु में अटूट विश्वास।

वा । ईश्वर की महान् शक्ति में विश्वास के कारण ही सचारा में सभी महान् काय हुए हैं । बड़े-बड़े आविष्कार कर्ता महान् दार्शनिक उत्तम कलाकार उसी प्रेरणा से कार्य करते हैं । उनमें से कोई जब ईश्वर को नहीं मानता तो उसका केवल इतना ही तात्पर्य होता है कि वे ईश्वर को अपने से निम्न नहीं मानते ।

ईश्वर से पृथक् होकर मानव मानव नहीं रहता, वह दानव बन जाता है । अज्ञान वैश्यानी रिषवतखोरी, झूठ—ये सभी शतान के कारनामे हैं । दमा, दाम, प-पकार सेवा आदि ईश्वर-विश्वासी जनों के सहज धर्म हैं । ईश्वर से पृथक् होकर कमाया धन धात्म-सन्तोष नहीं देता । ईश्वर से विमुक्त होकर पाया यद्यपि देर तक नहीं टिकता । ईश्वर के नियमों के विपरीत चल कर किये परिश्रम सफल नहीं हो पाते । वास्तविक प्रसन्नता, वास्तविक सुख और वास्तविक आनन्द उन्हे ही मिलता है जो अपने धर्म करण के तार निरन्तर उस सर्वशक्ति-मान् के धर्मल शक्तिश्रोत से जोड़े रहता है । वही सत्य को पाता है वही कल्याण को प्राप्त करता है । वही धैर्य बनता है । वही सोमा पाता है । वही कीर्ति पाता है । उसका नाम धर्म ही आता है ।



